DAWAT-E-ISLAMI

Chanda Karne Ki Shar-ee V Tanzimi Ehtiyaaten (Hindi)

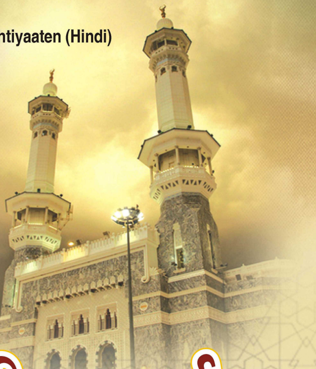

चन्दा जम्अ़ करने के दौरान ह़क़ीक़ी या इम्कानी
ग़-लत़ियों से बचाने वाली फ़िक्र अंगेज़ तह़रीर

चन्दा करने की शर-ई व तन्ज़ीमी एह़तियातें

المدينة العلمية
(دعوت اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

चन्दा करने की शरई व तन्ज़ीमी एह़तियातें

येह रिसाला (**चन्दा करने की शरई व तन्ज़ीमी एह़तियातें**) मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस,
अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,
अह़मदआबाद-1, गुजरात MO. 98987 32611
E-mail : hind.printing92@gmail.com

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

चन्दा करने की शर-ई व तन्ज़ीमी एह़तियातें

मदनी अ़त़िय्यात जम्अ़ करने वाले तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें लाज़िमन इस रिसाले का मुत़ालआ़ कीजिये ।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो सुब्ह़ व शाम मुझ पर दस दस बार दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा बरोज़े क़ियामत मेरी शफ़ाअ़त उसे पहुंच

www.dawateislami.net

कर रहेगी ।

(الترغیب والترھیب، ۱/ ۱۲۲، حدیث: ۹۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी के शो'बाजात का मुख़्तसर तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जुमादल उख़्रा 1437 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ मार्च **2016 सि.ई.** तक की मा'लूमात के मुत़ाबिक़ मुल्क में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़त सेंकड़ों **जामिअ़ातुल मदीना** (लिल बनीन व लिल बनात) क़ाइम हैं जिन में हज़ारों त़लबा व त़ालिबात दर्से निज़ामी कर रहे हैं, नीज़ हज़ारों **मदारिसुल मदीना** (लिल बनीन व लिल बनात) भी क़ाइम हैं जिन में **एक लाख से ज़ाइद** मदनी मुन्ने और मदनी मुन्नियां ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम

www.dawateislami.net

ह़ासिल कर रहे हैं। **मुख़्तलिफ़ सुन्नतों भरे कोर्सिज़** (मसलन फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स, इमामत कोर्स, मुदर्रिस कोर्स, सुन्नतों भरा कोर्स, मदनी इन्आ़मात व मदनी क़ाफ़िला कोर्स, कुफ़्ले मदीना कोर्स, फ़ैज़ाने इस्लाम कोर्स, फ़ैज़ाने कुरआनो ह़दीस कोर्स, **12** रोज़ा मदनी कोर्स वगै़रा), **दा'वते इस्लामी का चेनल** जो कि बे शुमार मुसल्मानों की इस्लाह़ का सबब बन रहा है नीज़ इस के ज़रीए़ लाखों लाख आ़शिक़ाने रसूल इ़ल्मे दीन से मालामाल हो रहे हैं, दा'वते इस्लामी के चेनल पर **रमज़ानुल मुबारक** में रोज़ाना दो मर्तबा और इ़लावा रमज़ान हफ़्ते में एक बार (बरोज़ हफ़्ता), नीज़ इस के इ़लावा भी वक़्तन फ़ वक़्तन मदनी मुज़ाकरे बराहे रास्त नश्र किये जाते हैं। **दारुल मदीना, कई दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत, अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या,**

www.dawateislami.net

मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या जिस से माहाना लाखों लाख मुसल्मान मुस्तफ़ीज़ हो रहे हैं, इस के इ़लावा सेंकड़ों **मदनी मराकिज़** (या'नी फ़ैज़ाने मदीना) और कसीर मसाजिद की ता'मीरात व इन्तिज़ामात, मदारिसुल मदीना ऑन लाइन, इसी त़रह़ सेंकड़ों **हफ़्तावार इज्तिमाआ़त, बड़ी रातों** (मसलन शबे मीलाद, ग्यारहवीं शरीफ़, शबे मे'राज, शबे बराअत और रमज़ानुल मुबारक की सत्ताईसवीं शब वग़ैरा) के इज्तिमाआ़त, पूरे माहे रमज़ान का **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** सेंकड़ों मक़ामात पर और **आख़िरी अ़शरे का सुन्नते ए'तिकाफ़ हज़ारों** मक़ामात पर होता है, जिन में हज़ारहा इस्लामी भाई मो'तकिफ़ होते हैं, ग़रज़ येह कि मुनज़्ज़म त़रीके़ से मदनी कामों को आगे बढ़ाने के लिये दा'वते इस्लामी के तह़्त तक़रीबन **102 शो'बाजात** क़ाइम हैं जिन के लिये ख़त़ीर रक़म दरकार होती है।

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वैसे तो बिल उ़मूम सारा ही साल दा'वते इस्लामी के मदनी कामों के लिये मदनी अ़ति़य्यात जम्अ़ करने का सिल्सिला रहता है मगर बिल खु़सूस रजबुल मुरज्जब, शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म और रमज़ानुल मुबारक में चूंकि ब कसरत लोग सदक़ात व अ़ति़य्यात की अदाएगी की त़रफ़ माइल होते हैं इस वज्ह से इन महीनों में मदनी अ़ति़य्यात इकठ्ठा करने का बेहतरीन मौक़अ़ होता है लिहाज़ा हमें चाहिये कि न सिर्फ़ अपने मदनी अ़ति़य्यात दा'वते इस्लामी को दें बल्कि दा'वते इस्लामी के मदनी कामों में मज़ीद तरक़्क़ी के लिये आज ही से भरपूर कोशिश करते हुए दीगर इस्लामी भाइयों से भी मदनी अ़ति़य्यात (ज़कात, फ़ित्रा, सदक़ात, ख़ैरात वग़ैरा) जम्अ़ करने की तरकीब बनाएं।

याद रखिये कि मौजूदा दौर में दीनी कामों के

www.dawateislami.net

लिये चन्दा (मदनी अ़तिय्यात) जम्अ़ करना अशद ज़रूरी है। रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ग़ैब निशान है : **“आख़िर ज़माने में दीन का काम भी दिरहम व दीनार से होगा।”**

(معجم کبیر، ۲۰/۲۷۹، حدیث:۶۶۰)

चूंकि मज़्हबी व फ़लाही काम अक्सर चन्दे ही के ज़रीए होते हैं लिहाज़ा मुस्तक़िल तौर पर उन्हें जारी रखने के लिये चन्दा तो जैसे तैसे कर ही लिया जाता है मगर इल्मे दीन की कमी के बाइस एक बहुत बड़ी ता'दाद इस के जम्अ़ करने में शरई ग़लतियां कर के गुनाहों में जा पड़ती है। याद रखिये ! चन्दा वुसूल करने वालों के लिये चन्दे के ज़रूरी मसाइल का सीखना फ़र्ज़ है। लिहाज़ा तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की ग़ैर सियासी तह़रीक **“दा'वते**

www.dawateislami.net

इस्लामी'' के वसीअ़ तर मफ़ाद के पेशे नज़र मजलिसे मालियात की त़रफ़ से नेकियां कमाने और मुसल्मानों को गुनाहों से बचाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त मदनी अ़ति़य्यात जम्अ़ करने वाले इस्लामी भाइयों के लिये सदक़ा करने और अ़ति़य्यात जम्अ़ करने के फ़ज़ाइल, अ़ति़य्यात में ख़िय़ानत की वई़दों और अ़ति़य्यात से मुतअ़ल्लिक़ अहम तन्ज़ीमी व शरई़ मसाइल के बारे में सुवालन जवाबन मा'लूमात पेशे ख़िदमत हैं :

राहे ख़ुदा में ख़र्च करने की फ़ज़ीलत

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने पाक कलाम में सदक़ा व ख़ैरात करने की तरग़ीब यूं इर्शाद फ़रमाई है :

www.dawateislami.net

وَ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّ اَعْظَمَ اَجْرًا ؕ

(پ ۲۹، المزمل: ۲۰)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और **अल्लाह** को अच्छा क़र्ज़ दो और अपने लिये जो भलाई आगे भेजोगे उसे **अल्लाह** के पास बेहतर और बड़े सवाब की पाओगे।

सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयत के तह़्त फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि इस क़र्ज़ से मुराद ज़कात के सिवा राहे ख़ुदा में ख़र्च करना और सिलए रेह़्मी में और मेहमान दारी में और येह भी कहा गया कि इस से तमाम

सदक़ात मुराद हैं जिन्हें अच्छी त़रह़ माले ह़लाल से खुशदिली के साथ राहे खुदा में ख़र्च किया जाए।

ह़ज़रते का'ब बिन उ़जरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "नमाज़ (ईमान की) दलील है और रोज़ा (गुनाहों से) ढाल है और सदक़ा कोताहियों को यूं मिटा देता है जैसे आग को पानी।"

(ترمذی، کتاب السفر، باب ما ذُکِر فی فضل الصلاۃ، ۱۱۸/۲، حدیث:۶۱۴)

मिश्कात शरीफ़ की शर्ह़ में है : बेशक सदक़ा जहन्नम से ढाल है और जन्नत की त़रफ़ वसीला है।

(مرقاۃ المفاتیح، ۴۹۰/۹، تحت الحدیث:۵۵۵۰)

अ़तिय्यात जम्अ़ करने की फ़ज़ीलत

बा'ज़ इस्लामी भाई मदनी अ़तिय्यात इकट्ठा

www.dawateislami.net

करने में झिजक मह़सूस करते हैं ह़ालां कि दीन की सर बुलन्दी के लिये चन्दा इकट्ठा करना सरवरे अम्बिया, ह़बीबे किब्रिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत से साबित है। ग़ज़्वए तबूक, मस्जिदे नबवी शरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ता'मीर, बीरे रूमा की ख़रीदारी वग़ैरा के मवाक़ेअ़ पर सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने राहे ख़ुदा में ख़र्च करने की तरग़ीब दिलाई लिहाज़ा आप भी हिम्मत कीजिये, झिजक उड़ाइये और एह़याए सुन्नत के लिये ख़ूब ख़ूब मदनी अ़तिय्यात जम्अ़ कीजिये। आइये तरग़ीब के लिये एक ह़दीसे मुबारका मुलाह़ज़ा कीजिये :

ह़ज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ़ बिन ख़दीज رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه

www.dawateislami.net

से मरवी है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये ह़क़ के मुत़ाबिक़ सदक़ा वुसूल करने वाला अपने घर लौटने तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करने वाले ग़ाज़ी की त़रह़ है। (ابو داؤد، کتاب الخراج ...الخ،باب فی السعایة ...الخ ، ۲۳۵/۳، حدیث:۲۹۳۶)

अ़त़िय्यात में ख़ियानत पर वईद

राह़ते क़ल्बे नाशाद, रसूले करीमो जव्वाद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे इब्रत बुन्याद है : ''कुछ लोग **अल्लाह** तआ़ला के माल में नाह़क़ तसर्रुफ़ करते हैं, क़ियामत के दिन उन के लिये जहन्नम है।'' (بخاری، کتاب فرض الخمس ،باب قول اللّٰه تعالی (فَاِنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ)، ۲/ ۳۴۸، حدیث:۳۱۱۸)

ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं : कितने ही लोग जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और उस के रसूल (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के माल में से जिस चीज़ को उन का दिल चाहता है अपने तसर्रुफ़ में ले आते हैं क़ियामत के दिन उन के लिये दोज़ख़ की आग है।

(ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی اخذ المال، ۴/۱۶۵، حدیث: ۲۳۸۱)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की त़रफ़ से तमाम आ़शिक़ाने रसूल को ख़ुसूसी ताकीद

जो इस्लामी भाई या इस्लामी बहनें चन्दा इकट्ठा करें उन्हें चन्दे के ज़रूरी अह़काम मा'लूम होना फ़र्ज़ है, हर एक की ख़िदमत में ताकीद है कि अगर पढ़ चुके हैं तब भी दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 107 सफ़ह़ात

www.dawateislami.net

पर मुश्तमिल किताब, ''चन्दे के बारे में सुवाल जवाब'' का दोबारा मुत़ालअ़ा फ़रमा लीजिये ।

अ़त़िय्यात जम्अ़ करने की निय्यतें

सुवाल मदनी अ़त़िय्यात जम्अ़ करते वक़्त निय्यत क्या होनी चाहिये ?

जवाब 1 फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ या'नी मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है । (معجم كبير،٦/١٨٥،حديث:٥٩٤٢) इस लिये दा'वते इस्लामी का हर ज़िम्मादार अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा ''**मदनी इन्आ़मात**'' में से ''**मदनी इन्आ़म नम्बर 1**'' पर अ़मल करते हुए येह निय्यत करे कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और उस के प्यारे ह़बीब

صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की खुशनूदी की ख़ातिर तब्लीगे़ दीन और इस्लाहे़ मुआ़शरा में मुआ़वनत के लिये मदनी अ़तिय्यात जम्अ़ करूंगा । اِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ

मदनी इन्आ़मात से अ़त्तार हम को प्यार है

اِنْ شَآءَالله दो जहां में अपना बेड़ा पार है

2 (येह निय्यत भी करनी चाहिये कि) मदनी अ़तिय्यात जम्अ़ करने में मद्दात का ख़ास ख़याल रखते हुए जो रक़म जिस मद में वुसूल होगी उसी मद में इन्दिराज कर के लोगों के अ़तिय्यात की शरीअ़त के मुताबिक़ दुरुस्त त़ौर पर अदाएगी करवाने में मुआ़वनत करूंगा । اِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ

मदनी अ़तिय्यात की अक़्साम

सुवाल उ़मूमन कितनी क़िस्म के मदनी अ़तिय्यात दा'वते इस्लामी को मौसूल होते हैं ?

www.dawateislami.net

जवाब दा'वते इस्लामी को उ़मूमन तीन क़िस्म के मदनी अ़त़िय्यात मौसूल होते हैं। (1) वाजिबा (2) नाफ़िला (3) मद्दाते मख़्सूसा

अ़त़िय्याते वाजिबा इन में ज़कात, फ़ित्रा, उ़श्र, उ़श्र की रक़म, क़सम के कफ़्फ़ारे, रोज़ों के फ़िदये, नमाज़ों के फ़िदये, मन्नते वाजिबा की रक़म और ह़ज या उ़म्रे के स–दक़े की रक़म भी शामिल है।

अ़त़िय्याते नाफ़िला इन में सदक़ा, ख़ैरात और हदिय्या वग़ैरा शामिल हैं।

मद्दाते मख़्सूसा इस में मस्जिद, जामिअ़तुल मदीना, मद्रसतुल मदीना और फ़ैज़ाने मदीना की ता'मीरात

www.dawateislami.net

व दीगर अख़राजात नीज़ लंगरे रज़विय्या के लिये ख़ास तौर पर दिये जाने वाले मदनी अ़तिय्यात शामिल हैं।

मदनी अ़तिय्यात जम्अ़ करने के त़रीक़े और एह़तियातें

सुवाल मदनी अ़तिय्यात जम्अ़ करने के लिये कोई ऐसा त़रीक़ए कार बयान कर दीजिये कि जिस से मदनी अ़तिय्यात में इज़ाफ़ा हो सके।

जवाब मदनी अ़तिय्यात में इज़ाफ़े के लिये दो त़रह़ की फ़ेहरिस्तें बनाई जाएं। **(1) इन्फ़िरादी (2) इज्तिमाई**

इन्फ़िरादी फ़ेहरिस्त इन्फ़िरादी तौर पर येह कि हर इस्लामी भाई मुल्क व बैरूने मुल्क में रहने वाले अपने

www.dawateislami.net

ख़ानदान के अफ़राद, अ़ज़ीज़ो अक़ारिब, दूर और क़रीब के रिश्तेदार, पड़ोसी, मह़ल्लेदार, दोस्त अह़बाब व दीगर मुतअ़ल्लिक़ीन की फ़ेहरिस्तें बनाए ताकि मौक़अ़ आने पर उन से मदनी अ़तिय्यात ह़ासिल किये जा सकें।

इज्तिमाई फ़ेहरिस्त इज्तिमाई त़ौर पर येह कि हर निगरान मसलन निगराने काबीनात/काबीना/शह्र/डिवीज़न/अ़लाक़ा/ह़ल्क़ा/ज़ैली ह़ल्क़ा मुशावरत मुख़य्यर ह़ज़रात (ताजिर, मिल मालिकान, ज़मीनदार वग़ैरा) की फ़ेहरिस्त तय्यार करे और मजलिसे मालियात के पास शख़्सिय्यात रेकॉर्ड रजिस्टर में उस का इन्दिराज भी करवाए ताकि इन तमाम शख़्सिय्यात का रेकॉर्ड मह़फ़ूज़ किया जा सके और हर साल राबित़ा करने में आसानी रहे।

www.dawateislami.net

इन्फ़िरादी त़ौर पर मदनी अ़तिय्यात जम्अ़ करने का त़रीक़ा

सब से पहले तो अपने घर से ज़कात, फ़ित्रा, उ़श्र, सदक़ात वग़ैरा की तरकीब बनाइये ❀ इस के बा'द रिश्तेदारों, मह़ल्ले दारों और दोस्त अह़बाब वग़ैरा से बिल मुशाफ़ा मुलाक़ात कर के या फिर मक्तूब, SMS या E Mail वग़ैरा के ज़रीए़ उन्हें राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल बता कर म–दनी अ़तिय्यात देने की तरग़ीब दिलाइये और मुम्किना सूरतों में हाथों हाथ जम्अ़ भी फ़रमाइये, मुलाक़ात के मदनी फूल इसी रिसाले के सफ़ह़ा 24 पर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये ❀ जो शख़्सिय्यात माहाना कुछ न कुछ दा'वते इस्लामी को मदनी अ़तिय्यात देने की निय्यत कर लें उन का नाम, पता और फ़ोन नम्बर वग़ैरा की तफ़्सीलात मजलिसे मालियात को दे दीजिये ताकि मुम्किना सूरतों में उन से हर माह वुसूली की तरकीब की जा सके ❀ हर

www.dawateislami.net

इस्लामी भाई को अपना येह मदनी ज़ेह्न बनाना चाहिये कि मैं रोज़ाना या हफ़्तावार या फिर माहाना अपनी आमदनी में से कुछ न कुछ मदनी अ़तिय्यात दा'वते इस्लामी के मदनी कामों के लिये हर नेक व जाइज़ काम में ख़र्च करने की इजाज़त के साथ जम्अ़ कराऊंगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

घरेलू सदक़ा बक्स व मदनी अ़तिय्यात बक्स की तरग़ीब

मुम्किना सूरतों में अपने और अपने जानने वालों के घरों में "**घरेलू सदक़ा बक्स**" की भी तरकीब बनाइये और उन "**घरेलू सदक़ा बक्स**" में जम्अ़ होने वाले मदनी अ़तिय्यात अपने त़ौर पर मुतअ़ल्लिक़ा ज़िम्मादार को जम्अ़ करवा कर रसीद ज़रूर ह़ासिल फ़रमाइये ❁ मौक़अ़ की मुनासबत से दीगर इस्लामी भाइयों को भी अपने घरों

www.dawateislami.net

में **"घरेलू सदक़ा बक्स"** और दुकानों में **"मदनी अ़तिय्यात बक्स"** रखने की तरग़ीब दिलाइये और इन का राबित़ा मजलिसे मदनी अ़तिय्यात बक्स के ज़िम्मादारान में से किसी से करवा दीजिये ताकि येह सिल्सिला जारी रहे।

इज्तिमाई त़ौर पर मदनी अ़तिय्यात जम्अ़ करने का त़रीक़ा

काबीनात/काबीना/शह्र/डिवीज़न/अ़लाक़ा/ह़ल्क़ा/ज़ैली सत़्ह़ पर ज़िम्मादारान मदनी मश्वरों के ज़रीए़ मजलिसे शूरा या मुतअ़ल्लिक़ा रुक्ने शूरा की त़रफ़ से तै़ किये गए अहदाफ़ अपने इस्लामी भाइयों में तक़्सीम फ़रमाएं, नीज़ मदनी अ़तिय्यात की तरग़ीब दिलाने के लिये सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ात मसलन शख़्सिय्यात इज्तिमाअ़ात या ताजिर इज्तिमाअ़ात का भी इन्इक़ाद फ़रमाएं और ज़िम्मादारान

www.dawateislami.net

अपनी अपनी ज़िम्मादारी और मन्सब के मुताबिक़ मदनी अ़तिय्यात के हदफ़ को पूरा करने में मसरूफ़ हो जाएं बल्कि हदफ़ से ज़ाइद मदनी अ़तिय्यात जम्अ़ करवाने की कोशिश फ़रमाएं ❁ कोशिश कीजिये कि दा'वते इस्लामी से महब्बत करने वाला हर शख़्स अपने मुस्तहिक़ रिश्तेदारों को देने के बा'द अपने घर के अ़तिय्यात मसलन ज़कात, फ़ित्रा, सदक़ात वग़ैरा दा'वते इस्लामी को ही जम्अ़ करवाए।

मदनी अ़तिय्यात के लिये बेनर्ज़ वग़ैरा की तरकीब

इस्लामी बहनों के हफ़्तावार इज्तिमाआ़त वग़ैरा में भी मदनी अ़तिय्यात के ए'लान, तरग़ीब, बेनर और बस्ते की तरकीब हो और ज़ैली ह़ल्क़ा या ह़ल्क़ा मुशावरत की ज़िम्मादार इस्लामी बहन वहीं हाथों हाथ मदनी अ़तिय्यात जम्अ़ कर के तन्ज़ीमी तरकीब के मुताबिक़ मदनी मर्कज़

www.dawateislami.net

को जम्अ़ करवाए ❁ जहां मदनी अ़तिय्यात के बेनर्ज़ मक्तबतुल मदीना पर दस्तयाब हों तो अज़ ख़ुद मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल फ़रमाएं और जहां तरकीब मुम्किन न हो तो बेनर्ज़ के अख़्राजात के लिये मुतअ़ल्लिक़ा ज़िम्मादार के ज़रीए़ से मालियात ज़िम्मादार या मालियात मक्तब से राबित़ा फ़रमाएं, बेनर्ज़ की ख़रीदारी के लिये अज़ ख़ुद मदनी अ़तिय्यात हरगिज़ इस्ति'माल न फ़रमाएं। ❁ रमज़ानुल मुबारक में होने वाले **इज्तिमाई सुन्नते ए'तिकाफ़** में मो'तकिफ़ीन इस्लामी भाइयों को भी ज़कात, फ़ित्रा, सदक़ात और हदिय्ये वग़ैरा जम्अ़ करवाने की तरग़ीब दिलाइये ❁ **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ात और बड़ी रातों के इज्तिमाअ़ात** मसलन मीलाद शरीफ़, ग्यारहवीं शरीफ़, मे'राज शरीफ़, शबे बराअत और रमज़ानुल मुबारक की सत्ताईसवीं शब व

www.dawateislami.net

दीगर बड़े इज्तिमाआ़त में भी चूंकि इस्लामी भाइयों की कसीर ता'दाद होती है लिहाज़ा इन मवाक़ेअ़ पर भी मदनी अ़त़िय्यात की तरग़ीब दिलाइये, बेनर्ज़ आवेज़ां कीजिये, बस्ते लगाइये और मुम्किना सूरतों में इस्लामी भाइयों के ज़रीए़ झोली की भी तरकीब बनाइये, झोली से मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीली मदनी फूल सफ़ह़ा 42 पर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये

❀ माहे रमज़ानुल मुबारक में जिन जिन नमाज़ों के अवक़ात में मुम्किन हो मस्जिद के बाहर मदनी अ़त़िय्यात के लिये बस्ते की तरकीब बनाइये बिल ख़ुसूस जुमुआ़ के दिन नमाज़े जुमुआ़ में तो लाज़िमी इस का एहतिमाम कीजिये

❀ जामिआ़तुल मदीना, मदारिसुल मदीना और दारुल मदीना के त़लबा नीज़ मुदर्रिसीन, नाज़िमीन, मुफ़त्तिशीन और मजालिस के मदनी मश्वरे कर के उन्हें

www.dawateislami.net

मदनी अ़ति़य्यात जम्अ़ करने के अहदाफ़ दीजिये, त़लबा छोटे हों तो सिर्फ़ उन के वालिदैन या सरपरस्त को और अगर त़लबा बड़े हों तो वालिदैन या सरपरस्त के साथ साथ उन त़लबा को भी हदफ़ दीजिये और इस रिसाले की रोशनी में मदनी अ़ति़य्यात इकठ्ठा करने की तरग़ीब दिलाइये इसी त़रह़ ज़िम्मादार इस्लामी बहनें भी तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ मुदर्रिसात, नाज़िमात, मुफ़त्तिशात और त़ालिबात वग़ैरा के मदनी मश्वरे कर के उन्हें अहदाफ़ दें

۞ निगराने काबीना के मश्वरे से अपने डिवीज़न/शह्र/अ़लाक़े में मदनी अ़ति़य्यात मुहिम जारी कीजिये।

मदनी अ़ति़य्यात के लिये मुलाक़ात के मदनी फूल

۞ ज़िम्मादारान को चाहिये कि दा'वते इस्लामी के मदनी

www.dawateislami.net

अ़ति़य्यात के लिये खुश अ़क़ीदा शख़्सिय्यात व मुख़य्यर ह़ज़रात से पेशगी वक़्त ले कर उन से मुलाक़ात की तरकीब बनाएं ।

❁ बेहतर येह है कि मुलाक़ात के लिये दो या तीन इस्लामी भाई मिल कर जाएं इस्लामी बहनें भी इसी त़रह़ करें ।

❁ दौराने मुलाक़ात शख़्सिय्यात व मुख़य्यर ह़ज़रात को **दा'वते इस्लामी** के मुख़्तलिफ़ मदनी कामों और शो'बाजात मसलन मद्रसतुल मदीना, जामिअ़तुल मदीना, दारुल मदीना स्कूल सिस्टम, मसाजिद की ता'मीरात, मदनी क़ाफ़िला, दा'वते इस्लामी का चेनल, शो'बए ता'लीम, मजलिसे आई टी, दा'वते इस्लामी की वेबसाइट (dawateislamiindia.org), मजलिसे खुसूसी इस्लामी भाई, मजलिसे इस्लाह़ बराए क़ैदियान वग़ैरा का तआ़रुफ़ करवाएं नीज़ शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की दीनी ख़िदमात से भी आगाह कीजिये।

۞ दा'वते इस्लामी के मदनी कामों पर सर्फ़ होने वाले अख़राजात बता कर दा'वते इस्लामी के हर नेक व जाइज़ काम में ख़र्च की निय्यत से माहाना मदनी अ़तिय्यात देने का ज़ेह्न बनाइये।

۞ मुम्किन हो तो शख़्सिय्यात के यहां मजलिसे "मदनी अ़तिय्यात बक्स" की मुशावरत व इजाज़त से मदनी फूलों के मुत़ाबिक़ मदनी अ़तिय्यात बक्स (Box) रखने की भी तरकीब बनाइये।

۞ दौराने मुलाक़ात इख़्तिलाफ़ी मसाइल, फ़ुज़ूल गुफ़्तगू और सियासी मुआ़मलात पर कलाम करने से मुकम्मल इज्तिनाब कीजिये।

www.dawateislami.net

۞ **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए ख़ौफ़े ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ), इश्क़े मुस्तफ़ा (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم), इख़्लास और अख़्लाक़े ह़सना से मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्तगू कीजिये, नीज़ अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और सहाबा व औलिया عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की इस्लाम की ख़ातिर क़ुरबानियों और इस्लाहे़ उम्मत के लिये दा'वते इस्लामी और बानिये दा'वते इस्लामी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के किरदारे बा सफ़ा जैसे उ़न्वानात ही को मौज़ूए सुख़न बनाइये।

۞ ह़दीसे पाक में है : ''تَهَادَوْا تَحَابُّوا'' या'नी एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी । (مؤطا امام مالک، ۲/۴۰۷، حدیث:۱۷۳۱) इस ह़दीसे पाक पर अ़मल की निय्यत से ज़ाती तौ़र पर ह़स्बे इस्तिताअ़त मदनी अ़तिय्यात देने वाली शख़्सिय्यात को मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ कुतुबो रसाइल मसलन ''**दा'वते इस्लामी**

www.dawateislami.net

की झल्कियां" रिसाला और VCD's वग़ैरा भी तोहूफ़तन पेश करें। याद ! रहे कि मदनी अ़तिय्यात से तोह़फ़ा देने की इजाज़त नहीं नीज़ ज़ाती तअ़ल्लुक़ात बनाने के बजाए रिज़ाए इलाही और तन्ज़ीमी कामों में तरक़्क़ी की निय्यत ही से तोह़फ़ा दिया जाए।

❀ शख़्सिय्यात व मुख़य्यर ह़ज़रात को दा'वते इस्लामी का चेनल देखने नीज़ हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ और मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत की तरग़ीब भी दिलाएं।

❀ मदनी अ़तिय्यात के महीनों (या'नी रजब, शा'बान और रमज़ान) के इ़लावा भी शख़्सिय्यात व मुख़य्यर ह़ज़रात से मुलाक़ात और राबिते़ की तरकीब रखते हुए उन्हें मदनी माह़ोल से वाबस्ता करने के लिये इन्फ़िरादी कोशिशों का सिल्सिला जारी रखिये।

www.dawateislami.net

मदनी अ़तिय्यात के बस्ते लगाने के मदनी फूल

۞ मदनी अ़तिय्यात के बस्तों पर ज़िम्मादार मुक़र्रर किये जाएं और उन की तरबियत का एहतिमाम भी किया जाए।

۞ मदनी अ़तिय्यात के बस्तों के लिये मेज़, कुर्सी वग़ैरा का एहतिमाम कीजिये। मुम्किना सूरतों में किराए पर लेने के बजाए अपने या किसी अहले मह़ब्बत के घर से तरकीब बना लीजिये अगर येह मुम्किन न हो तो अख़राजात के लिये अपने मुतअ़ल्लिक़ा ज़िम्मादार के ज़रीए मालियात ज़िम्मादार या मालियात मक्तब से राबित़ा फ़रमाइये।

۞ मुम्किन हो तो मदनी अ़तिय्यात के बस्तों पर मेगाफ़ोन का एहतिमाम भी कीजिये मगर इस बात का ख़ास ख़याल रखें कि आवाज़ इस क़दर बुलन्द न हो कि उस से लोगों को तक्लीफ़ पहुंचे।

www.dawateislami.net

۞ मदनी अ़तिय्यात के बस्तों पर मुनासिब रोशनी का भी एहतिमाम फ़रमाएं, लेकिन इस के लिये मस्जिद या मद्रसे से बिजली हरगिज़ हरगिज़ न ली जाए कि शरअ़न इस की इजाज़त नहीं।

۞ मदनी अ़तिय्यात के बस्तों पर खुले पैसे भी रखे जाएं ताकि अ़तिय्यात की वुसूली में किसी क़िस्म की परेशानी न हो, इस का मुनासिब त़रीक़ा येह है कि मद्दाते वाजिबा और नाफ़िला में से कुछ बड़े नोटों को खुला करवा कर अलग अलग रख लीजिये और बक़ाया रक़म की वापसी उसी मद की रक़म से कीजिये।

۞ अपनी जेब से अगर खुले पैसे लें तो किसी को गवाह बना लीजिये और रजिस्टर या कॉपी में भी लाज़िमी त़ौर पर लिख लीजिये ताकि अ़तिय्यात के इन्दिराज और अदाएगी में किसी क़िस्म की आज़्माइश और परेशानी का सामना

www.dawateislami.net

न हो ।

❀ बस्तों पर मुनासिब ता'दाद में रसीद बुक रखने का भी एहतिमाम कीजिये ताकि अ़त़िय्यात देने वाले को बर वक़्त रसीद पेश की जा सके ।

❀ रसीद बुक इन्तिहाई ह़िफ़ाज़त से रखिये ताकि किसी ग़लत़ हाथ में न जा सके ।

❀ मदनी अ़त़िय्यात के बस्तों पर डायरी, कॉपी, रजिस्टर या मदनी पेड वग़ैरा नीज़ क़लम रखने का भी एहतिमाम फ़रमाएं और हाथों हाथ रसीद बुक पर इन्दिराज के साथ साथ डायरी वग़ैरा में भी इन्दिराज फ़रमाते रहिये ताकि मद्दात में किसी क़िस्म की ग़लत़ी का अन्देशा न रहे ।

❀ जिस डायरी या मदनी पेड वग़ैरा पर अ़त़िय्यात का इन्दिराज फ़रमाएं उसे भी ह़िफ़ाज़त से रखें ताकि ब वक़्ते ज़रूरत उस के ज़रीए दरपेश मस्अले को ह़ल किया जा

www.dawateislami.net

सके।

❀ मदनी अ़ति़य्यात के हर बस्ते पर ''दा'वते इस्लामी के ख़िदमते दीन के 102 शो'बाजात'' वाला पेम्फ़लेट और रिसाला ''**इस्लाहे़ उम्मत में दा'वते इस्लामी का किरदार**'' और ''**दा'वते इस्लामी की झल्कियां**'' मुनासिब ता'दाद में रखे जाएं, ह़दीसे पाक में है : ''**تَهَادَوْا تَحَابُّوا**'' या'नी एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالک، کتاب حسن الخلق،باب ماجاء فی المهاجرة، ۲ /۴۰۷، حدیث:۱۷۳۱) इस ह़दीसे पाक पर अ़मल की निय्यत से ज़ाती त़ौर पर ह़स्बे इस्तित़ाअ़त मदनी अ़ति़य्यात देने वाली शख़्सिय्यात और बस्ते पर आने वालों को तोह़्फ़तन पेश किये जाएं। याद रहे कि मदनी अ़ति़य्यात से मदनी तोह़फ़ा देने की इजाज़त नहीं, नीज़ ज़ाती तअ़ल्लुक़ात बनाने के लिये तोह़फ़ा देने की निय्यत नहीं होनी चाहिये।

www.dawateislami.net

❁ मदनी अ़तिय्यात के बस्तों पर जम्अ़ शुदा मदनी अ़तिय्यात की ह़िफ़ाज़त का भी एहतिमाम फ़रमाइये इस की एक सूरत येह भी हो सकती है कि जैसे जैसे मदनी अ़तिय्यात केश या चेक की सूरत में जम्अ़ होते जाएं वक़्तन फ़ वक़्तन या'नी एक या दो दिन से ज़ियादा अपने पास रखने के बजाए तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ अपने मुतअ़ल्लिक़ा ज़िम्मादार या मालियात मक्तब में मद्दात की वज़ाह़त और मुकम्मल तफ़्सील के साथ मदनी अ़तिय्यात जम्अ़ करवा कर "**मदनी अ़तिय्यात रसीद बराए ज़िम्मादारान**" या "**रसीद बराए मक्तब**" ज़रूर ह़ासिल फ़रमाएं।

❁ मदनी अ़तिय्यात के बस्तों पर बेनर भी आवेज़ां कीजिये जिस का नमूना दर्जे ज़ैल है :

www.dawateislami.net

बेनर का नमूना

❁ बस्ते यकुम रमज़ान ता नमाज़े ईद रोज़ाना लगाइये जिन का दौरानिया कमो बेश **2** घन्टे या ज़ाइद हो ।

❁ खुसूसन आख़िरी अ़शरे की हर रात में नुमायां, बा रौनक़ और मह़फ़ूज़ मक़ामात पर बस्ते लगाने का लाज़िमी एहतिमाम कीजिये ।

❁ नमाज़े जुमुआ़ से क़ब्ल लगाए जाने वाले मदनी अ़तिय्यात के बस्ते जुमुआ़ की अज़ाने अव्वल शुरूअ़ होने

से पहले बन्द कर के अ़तिय्यात, मद्दात, रेकोर्ड और बस्ते का दीगर सामान ब हि़फ़ाज़त रख लिया जाए और फिर बयान व ख़ुत़्बा और नमाज़ में शिर्कत की जाए।

❁ जिन नमाज़ों से पहले मदनी अ़तिय्यात के बस्ते लगाए जाएं वहां ख़ुसूसन सुन्नते क़ब्लिय्या और नमाज़े बा जमाअ़त का एहतिमाम फ़रमाइये। यूं ही फ़राइज़ से फ़ारिग़ हो कर सुन्नते बा'दिय्या अदा करने के बा'द ही बस्ता लगाइये क्यूं कि नमाज़ों का एहतिमाम हर ह़ाल में ज़रूरी है।

❁ रमज़ानुल मुबारक की सत्ताईसवीं शब से हर नमाज़ के बा'द मसाजिद के अन्दर या बाहर (जहां इजाज़त हो) इसी त़रह़ ईदुल फ़ित्र के दिन ईदगाह और क़ब्रिस्तान के रास्तों और दाख़िली और ख़ारिजी दरवाज़ों पर भी

www.dawateislami.net

"मदनी अ़तिय्यात" के बस्ते लगाए जाएं।

❀ जिन जगहों पर इख़्तिलाफ़ी सूरत का अन्देशा हो वहां ह़िक्मते अ़मली के तह़त कुछ फ़ासिले पर बस्ते लगाए जाएं ताकि किसी क़िस्म के मसाइल का सामना न हो।

मद्दाते वाजिबा और मद्दाते मख़्सूसा से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अहम एह़तियातें

सुवाल अ़तिय्यात किन अल्फ़ाज़ के साथ वुसूल किये जाएं और रसीद बुक वग़ैरा पर उन का इन्दिराज किस त़रह़ किया जाए ?

जवाब अ़तिय्यात देने वाले से अगर बराहे रास्त नफ़्ली अ़तिय्यात की वुसूली की तरकीब बन रही हो तो ह़त्तल इम्कान तरग़ीब दिला कर **"दा'वते इस्लामी के हर नेक व जाइज़ काम में ख़र्च करने"** की इजाज़त

www.dawateislami.net

के साथ वुसूल फ़रमाइये क्यूं कि बा'ज़ "मद्दाते मख़्सूसा" मसलन मख़्सूस ता'मीरात वग़ैरा के अख़राजात महदूद या'नी कम होते हैं और बच जाने वाली रक़म अ़र्सए दराज़ तक रुकी रहती है, या उस में कुछ दीगर परेशानियों का सामना करना पड़ता है, जब कि हर नेक व जाइज़ काम में ख़र्च की इजाज़त से लिये गए "अ़त़िय्याते नाफ़िला" दा'वते इस्लामी के मुख़्तलिफ़ शो'बाजात में से किसी भी शो'बे में शरई रहनुमाई के साथ ख़र्च किये जा सकते हैं।

۞ अगर कोई इस्लामी भाई मद्दाते मख़्सूसा के लिये ही अ़त़िय्यात देना चाहे तो भी वुसूल किये जा सकते हैं लेकिन "मद्दाते मख़्सूसा" की आमदन का ह़िसाब हर मद के ए'तिबार से अलग अलग तय्यार किया जाए।

۞ बा'ज़ इस्लामी भाई ज़कात किसी ख़ास काम या

www.dawateislami.net

ख़ास मक़्सद मसलन जामिआ़, मद्रसा वग़ैरा के लिये भी देते हैं तो ऐसी सूरत में रसीद और रेकॉर्ड दोनों में मद और मक़्सद दुरुस्त और वाज़ेह़ त़ौर पर दर्ज फ़रमाइये।

❀ अगर कोई इस्लामी भाई नियाज़ के लिये रक़म देना चाहें तो उन को येह ज़ेह्न दीजिये कि "नियाज़ का मक़्सद ईसाले सवाब है लिहाज़ा आप जिन बुज़ुर्ग की नियाज़ दिलाना चाहते हैं उन के ईसाले सवाब के लिये लंगरे रज़विय्या की मद में दे दीजिये या फिर दा'वते इस्लामी के हर नेक व जाइज़ काम में ख़र्च करने की इजाज़त के साथ दे दीजिये, दा'वते इस्लामी के जिन जिन नेक कामों में इन अ़त़िय्यात को ख़र्च किया जाएगा उस का सवाब اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ उन बुज़ुर्ग को पहुंचता रहेगा।" लंगर रज़विय्या की ता'रीफ़ व अल्फ़ाज़ अगले मदनी फूल में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

۞ लंगरे ग्यारहवीं, लंगरे बारहवीं लंगरे 15 रजब (कूंडों की नियाज़), शबे मे'राज, शबे बराअत और शबे क़द्र की मद में भी अतिय्यात लिये जा सकते हैं, लेकिन बेहतर येह है कि लंगरे रज़विय्या की मद में अतिय्यात वुसूल किये जाएं और अतिय्यात देने वाले से इन अल्फ़ाज़ के साथ अतिय्यात लिये जाएं "**आप अपनी येह रक़म रमज़ानुल मुबारक की सहरी व इफ़्तारी, बड़ी रातों और दीगर मवाक़ेअ़ पर ग़रीब व अमीर, मो'तकिफ़ व ग़ैर मो'तकिफ़, रोज़ादार व बे रोज़ादार सभी को खाना खिलाने और इन में अश्याए ख़ुर्दो नोश तक़्सीम करने, दरियां, थाल और डेकोरेशन का सामान ख़रीदने या किराए पर लेने नीज़ इन के इलावा हर त़रह़ के नेक और जाइज़ कामों में ख़र्च**

www.dawateislami.net

करने की दा'वते इस्लामी को मुकम्मल इजाज़त दे दीजिये ।"

❁ लंगरे रज़विय्या के लिये सिर्फ़ और सिर्फ़ सदक़ाते नाफ़िला ही वुसूल कीजिये क्यूं कि लंगरे रज़विय्या में अमीर व ग़रीब सभी शरीक होते हैं लिहाज़ा इस के लिये ज़कात, फ़िदया बल्कि सदक़ाते वाजिबा की बयान कर्दा अक़्साम में से कोई भी क़िस्म हरगिज़ हरगिज़ वुसूल न कीजिये और न ही किसी को इस की तरग़ीब दीजिये ।

❁ यूंही तक़्सीमे रसाइल और दारुल मदीना के लिये भी अ़तिय्याते वाजिबा की तरग़ीब न दिलाइये बल्कि दा'वते इस्लामी के शो'बाजात की तफ़्सीलात बता कर उन का ज़ेह्न बनाइये और दा'वते इस्लामी के लिये वुसूल फ़रमाइये, अगर कोई मज़्कूरा मद्दात या'नी लंगरे रज़विय्या, तक़्सीमे

www.dawateislami.net

रसाइल या दारुल मदीना के लिये ही अ़त़िय्यात देना चाहे तो इस के मख़्सूस कर्दा अल्फ़ाज़ के मुत़ाबिक़ इजाज़त के साथ सिर्फ़ और सिर्फ़ अ़त़िय्याते नाफ़िला ही वुसूल कीजिये ।

❀ अगर सदक़ाते वाजिबा देने वाले ने फ़क़ीर मुतअ़य्यन कर दिया (मसलन सैलाब ज़दगान या जामिआ़ के त़लबा या फिर मद्रसे के त़लबा वग़ैरा के लिये) तो रसीद पर मक़्सद के कॉलम में उसे लाज़िमी दर्ज कीजिये ।

❀ मद्दाते मख़्सूसा, मद्दाते वाजिबा और मद्दाते नाफ़िला में से हर एक को अलग अलग ही रखिये और इन के रेकॉर्ड भी अलग अलग ही तरतीब दीजिये ताकि आपस में मद्दात मिल जाने का अन्देशा ही न रहे ।

www.dawateislami.net

❁ अ़तिय्याते वाजिबा मसलन क़सम के कफ़्फ़ारे, नमाज़ के फ़िदये, रोज़े के फ़िदये और मन्नत वग़ैरा में से कोई मद वुसूल हो तो उस की मुकम्मल तफ़्सीलात ज़रूर मा'लूम कीजिये मसलन कितनी क़समों के कफ़्फ़ारे हैं ? कितनी नमाज़ों या रोज़ों के फ़िदये हैं ? इसी त़रह़ मन्नत के मुकम्मल अल्फ़ाज़ वग़ैरा भी मा'लूम कर के रसीद पर उस का भी इन्दिराज कीजिये, नीज़ रक़म देने वाले का फ़ोन नम्बर रसीद पर ज़रूर दर्ज फ़रमाइये ताकि अगर मज़ीद तफ़्सीलात मा'लूम करने की ज़रूरत हो तो राबित़ा किया जा सके।

झोली और बस्ते के लिये अल्फ़ाज़ व एह़तियातें

सुवाल क्या झोली भी मदनी अ़तिय्यात जम्अ़ करने का ज़रीआ़ है ? अगर है तो इस की एह़तियातें और

www.dawateislami.net

मोह़तात़ अल्फ़ाज़ बयान फ़रमा दीजिये ।

जवाब दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त, बड़ी रातों के इज्तिमाआ़त, जुमुआ़ व ईदैन, ईदगाहों, क़ब्रिस्तानों, मसाजिद, मेन बस स्टोप, पेट्रोल पम्प, रेल्वे स्टेशन, सब्ज़ी मन्डियों, लारी अड्डों, कचहरियों, डाक ख़ानों, हस्पतालों, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के मज़ारों, बाज़ारों, मार्केटों और शोपिंग सेन्टर्ज़ वग़ैरा में जहां भीड़ की वज्ह से लोग जल्द से जल्द मदनी अ़तिय्यात दे कर निकलना चाहते हैं, इन मक़ामात पर बिल ख़ुसूस और निगराने काबीना या डिवीज़न मुशावरत निगरान या मालियात ज़िम्मादार की मुशावरत से तै़ शुदा मह़फ़ूज़ मक़ामात पर बिल उ़मूम मदनी अ़तिय्यात की झोली व बस्ते का लाज़िमी एहतिमाम कीजिये ।

❀ झोली व बस्ते के ज़रीए़ मदनी अ़तिय्यात वुसूल करने

www.dawateislami.net

वाले इस्लामी भाइयों की पहले अच्छी त़रह़ तरबियत की जाए और उस के बा'द ही येह अहम काम उन के सिपुर्द किया जाए वरना थोड़ी सी बे एह़तियात़ी शदीद नुक़्सान का सबब बन सकती है, अ़त़िय्यात की वुसूली का ए'लान होते ही मह़ब्बत का इज़्हार करते हुए हर किसी का झोली ले कर खड़े हो जाना दुरुस्त नहीं, झोलियां सिर्फ़ वोही इस्लामी भाई ले कर खड़े हों जिन की बा क़ाइदा तरबियत की गई हो और ख़ास त़ौर पर येह काम उन्हें सोंपा गया हो।

۞ मदनी मर्कज़ की त़रफ़ से झोलियों के लिये जिस रंग की तख़्सीस की गई है सिर्फ़ उसी रंग की झोलियों की तरकीब बनाइये, लिहाज़ा ज़िम्मादारान को चाहिये कि उस मख़्सूस रंग की झोलियों के कपड़े पहले से तय्यार रखें और तरबियत याफ़्ता इस्लामी भाइयों को पेश्गी दे दें ताकि सिर्फ़ वोही झोलियां मदनी अ़त़िय्यात के लिये

www.dawateislami.net

इस्ति'माल की जाएं नीज़ उसी मख़्सूस रंग के कपड़ों का ए'लान किया जाए, मदनी माह़ोल में कसरत से पाए जाने वाले रंग मसलन सफ़ेद (White), सब्ज़ (Green), कथ्थई (Brown) रंग के कपड़ों में मदनी अ़तिय्यात के लिये झोली लगाने से इज्तिनाब करें।

۞ बेहतरीन त़रीक़ए कार येह है कि झोली सिर्फ़ सदक़ाते नाफ़िला के लिये लगाई जाए और सदक़ाते वाजिबा (मसलन ज़कात, फ़ित्रा, उ़श्र वग़ैरा) और मद्दाते मख़्सूसा (मसलन मस्जिद, मद्रसा, जामिआ़ वग़ैरा) के लिये झोली के बजाए अलग से बस्ता लगाइये और बस्ते पर तफ़्सीलात के साथ इन मद्दात को वुसूल फ़रमाइये, मदनी अ़तिय्यात के बस्ते पर बेनर भी आवेज़ां हो और रसीद बुक भी मौजूद हो और इस सूरत में दर्जे ज़ैल मोह़तात़ अल्फ़ाज़ के मुत़ाबिक़ ए'लानात कीजिये :

www.dawateislami.net

सदक़ाते नाफ़िला की झोली के मोह़तात़ अल्फ़ाज़

"दा'वते इस्लामी के हर नेक व जाइज़ काम के लिये अपने नफ़्ली सदक़ात इस झोली में डालिये और अपनी ज़कात, फ़ित़्रा, और दीगर मदनी अ़त़िय्यात बस्ते पर जम्अ़ करवा कर रसीद ज़रूर ह़ासिल कीजिये।"

मदनी अ़त़िय्यात के बस्ते पर सदा लगाने के मोह़तात़ अल्फ़ाज़

"अपनी ज़कात, फ़ित़्रा और दीगर अ़त़िय्याते वाजिबा दा'वते इस्लामी को दीजिये और रसीद ज़रूर ह़ासिल कीजिये।"

नोट झोली व बस्ते के दरमियान इतना फ़ासिला हो कि दोनों की सदाएं मिक्स न हों ताकि सुनने वाले को

www.dawateislami.net

ग़लत़ फ़हमी न हो।

रसीद बुक के ह़वाले से अहम हिदायात और एह़तियातें

सुवाल मदनी अ़ति़य्यात जम्अ़ करवाने की तरग़ीब कब से शुरूअ़ की जाए ?

जवाब चूंकि अक्सर मुसल्मान रजबुल मुरज्जब, शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म और रमज़ानुल मुबारक में अपने मदनी अ़ति़य्यात जम्अ़ करवाते हैं, लिहाज़ा यकुम रजबुल मुरज्जब से ही मदनी अ़ति़य्यात जम्अ़ करवाने की तरग़ीब और वुसूली की तरकीब शुरूअ़ फ़रमा दीजिये।

❁ मदनी अ़ति़य्यात जम्अ़ करने की रसीदें जिन इस्लामी भाइयों को जारी की जाएं उन की मुकम्मल तफ़्सीलात

www.dawateislami.net

(नाम, फ़ोन नम्बर, एड्रेस, तन्ज़ीमी ज़िम्मादारी, काबीना और काबीनात वग़ैरा) नीज़ रसीद बुक नम्बर और रसीद बुक का सीरियल भी मालियात मक्तब की त़रफ़ से दिये गए **रसीद बुक इजरा रजिस्टर/फ़ोर्म** पर ज़रूर तह़रीर फ़रमाइये।

۞ दा'वते इस्लामी के लिये मदनी अ़त़िय्यात की वुसूली करते वक़्त रसीद में मौजूद तमाम तफ़्सीलात (मसलन नाम, फ़ोन नम्बर, एड्रेस, ई मेइल एड्रेस वग़ैरा) में से जिस क़दर मुम्किन हो मा'लूम कर के दर्ज कीजिये इसी त़रह़ रसीद पर तह़रीर मद्दात (ज़कात, फ़ित्रा, उ़श्र वग़ैरा) के आगे इन ही मद्दात की रक़म दर्ज फ़रमाइये। अ़त़िय्यात रसीद पुर करने का मुकम्मल त़रीक़ा जानने के लिये इसी रिसाले के सफ़ह़ा 82 पर पुर की हुई रसीद का नमूना

मुलाहज़ा फ़रमाइये।

याद रहे ! ज़रा सी ग़फ़्लत या जल्द बाज़ी की वज्ह से मद्दात को वाज़ेह न करना किसी की ज़कात या फ़ित्रा ज़ाएअ होने का सबब बन सकता है, लिहाज़ा मदनी अतिय्यात की वुसूली के वक़्त मदनी अतिय्यात की मद्दात का मुकम्मल इन्दिराज रसीद पर करने के साथ साथ अपने पास मौजूद रजिस्टर या कॉपी वग़ैरा में लाज़िमी कर लीजिये ताकि किसी भी सूरत में मद्दात की तफ़्सीलात ज़ाएअ होने का अन्देशा न रहे।

۞ मदनी अतिय्यात देने वाले का फ़ोन नम्बर रसीद पर दस्तख़त के साथ ज़रूर दर्ज फ़रमाइये ताकि मजलिसे मालियात या इफ़्ता मक्तब को मदनी अतिय्यात से मुतअल्लिक़ किसी भी क़िस्म की तफ़्सीलात मा'लूम करनी हों तो राबिता किया जा सके, इसी तरह अगर कोई

www.dawateislami.net

इस्लामी भाई किसी और की त़रफ़ से मदनी अ़तिय्यात जम्अ़ करवाए तो मदनी अ़तिय्यात भेजने वाले और मदनी अ़तिय्यात लाने वाले दोनों की तफ़्सीलात रसीद पर दर्ज कीजिये।

❁ दा'वते इस्लामी के लिये मदनी अ़तिय्यात देने वाले हर इस्लामी भाई को मजलिसे मालियात की त़रफ़ से जारी कर्दा मदनी अ़तिय्यात की रसीद ज़रूर दीजिये, अगर कोई इस्लामी भाई येह कह कर रसीद लेने से इन्कार करे कि "**मुझे दा'वते इस्लामी पर भरोसा है**" तब भी ज़ेहन बना कर रसीद पेश करने की कोशिश फ़रमाइये क्यूं कि इस त़रह़ दा'वते इस्लामी का पैग़ाम ब ज़रीअ़ए रसीद घर के कई अफ़राद तक पहुंच सकता है।

❁ अ़लाक़ा/शह्र/डिवीज़न/काबीना किसी भी सत़्ह़ का ज़िम्मादार हो उसे चाहिये कि जारी की गई रसीद बुक्स

(Books) और उन के मुत़ाबिक़ जम्अ़ शुदा मदनी अ़त़िय्यात मद्दात की **वज़ाह़त के साथ** मुकम्मल रेकॉर्ड और बच जाने वाली रसीदें **शव्वालुल मुकर्रम** के इब्तिदाई 5 दिनों के अन्दर अन्दर अपने मुतअ़ल्लिक़ा ज़िम्मादार को जम्अ़ करवा कर **''मदनी अ़त़िय्यात रसीद बराए ज़िम्मादारान''** लाज़िमी ह़ासिल करे।

नक़्दी (CASH) के मुतअ़ल्लिक़ अहम हिदायात और एह़तियातें

सुवाल नक़्दी (CASH) और इन्आ़मी बॉन्ड्ज़ की सूरत में मिलने वाले मदनी अ़त़िय्यात वुसूल करने से मुतअ़ल्लिक़ एह़तियातें बयान फ़रमा दीजिये।

जवाब केश की सूरत में वुसूल किये जाने वाले मदनी अ़त़िय्यात हाथों हाथ चेक फ़रमा लीजिये, ऐसे

www.dawateislami.net

नोट बत़ौरे अ़तिय्यात हरगिज़ वुसूल न कीजिये जो जा'ली हों या बन्द हो चुके हों या उन की ह़ालत ऐसी हो कि बेंक भी वुसूल न करता हो अलबत्ता ऐसी सूरते ह़ाल में बह़सो मुबाह़सा और सख़्त कलामी से इज्तिनाब करते हुए ह़िक्मते अ़मली और हुस्ने अख़्लाक़ से काम लीजिये।

❀ गवर्नमेन्ट की त़रफ़ से जारी कर्दा इन्अ़ामी बॉन्ड्ज़ भी अ़तिय्याते नाफ़िला या वाजिबा के त़ौर पर लिये जा सकते हैं, इन्अ़ामी बॉन्ड्ज़ का हुक्म भी केश की त़रह़ का है या'नी जिस त़रह़ केश की ह़िफ़ाज़त का इन्तिज़ाम किया जाता है बिल्कुल इसी त़रह़ इन की भी ह़िफ़ाज़त का इन्तिज़ाम करना चाहिये और बॉन्ड्ज़ वुसूल करने की सूरत में रसीद पर दीगर तफ़्सीलात का इन्दिराज करते वक़्त बॉन्ड का नम्बर और उस की मालियत ज़रूर तह़रीर

www.dawateislami.net

कीजिये और मालियात मक्तब में वोही बॉन्ड्ज़ जम्अ़ करवाइये, बॉन्ड्ज़ को तब्दील करने या अज़ ख़ुद केश करवाने की हरगिज़ इजाज़त नहीं।

सुवाल मदनी अ़तिय्यात में अगर ग़ैर मुल्की करन्सी, सोना, चांदी या कोई और क़ीमती धात वग़ैरा मौसूल हो तो क्या उसे फ़रोख़्त कर के रक़म मजलिसे मालियात को जम्अ़ करवा सकते हैं?

जवाब अ़तिय्याते वाजिबा या नाफ़िला में सोना, चांदी या ग़ैर मुल्की करन्सी वग़ैरा में से जो चीज़ जिस सूरत में मौसूल हो उसी सूरत में मुतअ़ल्लिक़ा मालियात मक्तब में जम्अ़ करवाइये।

❀ इस बात का ख़याल रखिये कि अ़तिय्याते वाजिबा और नाफ़िला इस त़रह़ मिक्स न होने पाएं कि इम्तियाज़

www.dawateislami.net

ही न रहे कि कौन से वाजिबा थे और कौन से नाफ़िला, क्यूं कि इस मुआ़मले में ज़रा सी ग़फ़्लत व बे एह़तियात़ी से तावान लाज़िम हो सकता है।

❀ अ़तिय्यात के महीने (या'नी रजब, शा'बान, रमज़ान) हों या आ़म दिन, केश की सूरत में मौसूल होने वाले मदनी अ़तिय्यात ज़रूरतन एक या दो दिन से ज़ियादा अपने पास घर, मद्रसे या जामिआ़ वग़ैरा में न रखें कि **मदनी अ़तिय्यात जितनी ज़ियादा जल्दी मदनी मर्कज़ को जम्अ़ करवाएंगे उतनी ही जल्दी आप और जिन के अ़तिय्यात हैं दोनों बरिय्युज़्ज़िम्मा हो सकेंगे, बिला वज्ह ताख़ीर करने की सूरत में आज़्माइश ही आज़्माइश है,** लिहाज़ा तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ मदनी अ़तिय्यात अपने मुतअ़ल्लिक़ा

www.dawateislami.net

ज़िम्मादार या मालियात मक्तब में मद्दात की वज़ाहत और मुकम्मल तफ़्सील के साथ फ़ौरी तौर पर जम्अ करवा कर "**मदनी अतिय्यात रसीद बराए ज़िम्मादारान**" या "**रसीद बराए मक्तब**" ज़रूर हासिल फ़रमाएं।

❁ अगर केश फ़ौरी तौर पर जम्अ करवाना मुम्किन न हो तो हिफ़ाज़त के साथ किसी महफ़ूज़ जगह पर रखिये और इस बारे में अपने मुतअल्लिक़ा ज़िम्मादारान को भी मुत्तलअ फ़रमा दीजिये और फिर जैसे ही मुम्किन हो फ़ौरी तौर पर मुतअल्लिक़ा ज़िम्मादार या मालियात मक्तब में जम्अ करवा दीजिये। याद रहे ! ऐसी सूरत में हिफ़ाज़त का भरपूर एहतिमाम होना चाहिये, जान बूझ कर सुस्ती करना आप के लिये आज़्माइश का सबब बन सकता है, नीज़ नुक़्सान की सूरत में तावान भी लाज़िम आ सकता है, बहर हाल **मोहतात सदा सुखी रहता है।**

www.dawateislami.net

❀ मजालिस व शो'बाजात के ज़िम्मादारान अपने मुतअ़ल्लिक़ा ज़िम्मादार को अ़तिय्यात जम्अ़ करवाते वक़्त अ़तिय्यात रसीद ज़रूर ह़ासिल फ़रमाएं और इस पर मुकम्मल तफ़्सीलात का इन्दिराज भी चेक फ़रमा लें।

❀ **"मदनी अ़तिय्यात रसीद बराए ज़िम्मादारान"** पर अ़तिय्यात जम्अ़ करवाने वाले और जम्अ़ करने वाले दोनों ज़िम्मादारान की तफ़्सीलात (नाम, एड्रेस, फ़ोन नम्बर, ज़िम्मादारी वग़ैरा) और मदनी अ़तिय्यात की मद्दात की मुकम्मल तफ़्सीलात ज़रूर लिखें, **"मदनी अ़तिय्यात रसीद बराए ज़िम्मादारान"** का पुर किया हुवा नमूना इसी रिसाले के सफ़ह़ा 86 पर मुलाह़ज़ा कीजिये।

❀ तमाम ज़िम्मादारान अपने मा तह़्त इस्लामी भाइयों से अ़तिय्यात वुसूल करते वक़्त **"मदनी अ़तिय्यात रसीद बराए ज़िम्मादारान"** ही इस्ति'माल फ़रमाएं और इसी

www.dawateislami.net

पर वुसूली दें, अगर मद्दात ज़ियादा हों और रसीद पर कॉलम कम हों तो दूसरी रसीद पर इन्दिराज फ़रमाएं, रसीद की पिछली त़रफ़ या अत़राफ़ में मद्दात की तफ़्सीलात का इन्दिराज न फ़रमाएं।

۞ नमाज़े ईद के लिये जाते हुए या इस क़िस्म के दीगर मवाक़ेअ़ पर अक्सर लोग जल्दी में होते हैं और बा'ज़ अवक़ात फ़ित्रे से ज़ियादा रक़म येह कह कर दे जाते हैं कि इतनी रक़म फ़ित्रा है और बाक़ी अ़तिय्याते नाफ़िला या हर नेक व जाइज़ काम के लिये है, ऐसे लोग जल्दी की वज्ह से उ़मूमन रसीद नहीं ले पाते ऐसी सूरत में बस्ते पर मौजूद इस्लामी भाइयों को चाहिये कि अ़तिय्याते वाजिबा और नाफ़िला की रक़म फ़ौरी त़ौर पर नोट फ़रमा लें ब सूरते दीगर इन के आपस में मिक्स हो जाने और तावान की सूरत बनने का क़वी अन्देशा है।

www.dawateislami.net

मदनी मश्वरा अपने पास हर वक़्त क़लम और मदनी पेड या डायरी वग़ैरा रखिये और इन का बर वक़्त इस्ति'माल भी कीजिये।

चेक और बेंक के ह़वाले से अहम हिदायात और एह़तियातें

सुवाल मदनी अ़तिय्यात में अगर कोई चेक दे तो वुसूल कर सकते हैं या नहीं? अगर वुसूल कर सकते हैं तो इस का त़रीक़ा भी इर्शाद फ़रमा दीजिये।

जवाब मदनी अ़तिय्यात के चेक ख़्वाह सदक़ाते वाजिबा (मसलन ज़कात, फ़ित्रा, उ़श्र वग़ैरा) के लिये हों या नाफ़िला के लिये, वुसूल किये जा सकते हैं लेकिन चेक बनवाते और वुसूल करते वक़्त इस बात को ज़रूर मद्दे नज़र रखें कि "**क्रोस चेक**" दा'वते इस्लामी

www.dawateislami.net

(dawateislami) के नाम पर बनवाएं और वोही चेक डिवीज़न मालियात ज़िम्मादार या मुतअ़ल्लिक़ा मालियात मक्तब में जम्अ़ करवाएं, अपने या किसी और के ज़ाती एकाउन्ट में जम्अ़ करवा कर उस के बदले अपना या किसी और का चेक जम्अ़ करवाने की तन्ज़ीमी त़ौर पर हरगिज़ इजाज़त नहीं ।

۞ अगर कोई इस्लामी भाई एकाउन्ट की तफ़्सीलात त़लब करें तो उन्हें ज़कात फ़ित्ऱा, लंगरे रज़विय्या और नफ़्ली सदक़ात के एकाउन्ट्स की अलग अलग तफ़्सील (जो कि इस रिसाले के सफ़ह़ा 89, 90 पर भी दी गई है) वज़ाह़त के साथ बताइये और साथ ही साथ उन का येह ज़ेह्न भी बनाइये कि आप जैसे ही कोई अ़तिय्यात मुतअ़ल्लिक़ा एकाउन्ट बिल ख़ुसूस ज़कात व फ़ित्ऱा वाले एकाउन्ट में किसी भी

www.dawateislami.net

ज़रीए़ से ट्रान्सफ़र या डिपोजि़ट फ़रमाएं तो ट्रान्सफ़र या डिपोजि़ट की रसीद के साथ **dawateislamiindia.org** पर E Mail या वोट्स एप (**whats App**) नम्बर **8469605565** पर मेसेज या SMS के ज़रीए़ ज़रूर मुत्त़लअ़ फ़रमाएं कि आप ने किस एकाउन्ट में ? किस तारीख़ को ? किस मद में ? कितनी रक़म जम्अ़ करवाई है ? ताकि आप की ज़कात, फ़ित्ऱा व दीगर वाजिबात बर वक़्त अदा किये जा सकें, अगर आप की त़रफ़ से इत्ति़लाअ़ मिलने में ताख़ीर हुई तो मुम्किन है कि आप की ज़कात ताख़ीर से अदा हो और ज़कात की अदाएगी में ताख़ीर करना गुनाह है । याद रहे ! अगर बेंक मा'मूल के मुता़बिक़ खुले रहे तो आप के सदक़ाते वाजिबा दा'वते इस्लामी के बेंक एकाउन्ट में क्लीयर हो जाने की

www.dawateislami.net

सूरत में तक़रीबन **15** से **20** दिन के अन्दर अन्दर अदा किये जा सकेंगे । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

۞ अ़तिय्याते वाजिबा या नाफ़िला अगर शहर सत़्ह़ के मालियात के एकाउन्ट में जम्अ़ करवाएं तो उस की रसीद की कोपी भी अपने पास ज़रूर मह़फ़ूज़ रखिये और मालियात में इन्दिराज करवाने और "**रसीद बराए मक्तब**" ह़ासिल करने के लिये बेंक की अस्ल रसीद **(Original Bank Slip)** अपने साथ लेते आइये ।

۞ उ़मूमन हिन्द भर से दा'वते इस्लामी के एकाउन्ट में अ़तिय्यात जम्अ़ करवाने पर बेंक की त़रफ़ से कोई अख़राजात **(Charges)** नहीं मगर इस के बा वुजूद अगर आप के यहां किसी क़िस्म के अख़राजात **(Charges)** मांगे जाएं तो इस की अदाएगी मदनी अ़तिय्यात से न कीजिये बल्कि ऐसी सूरत में पहले मुतअ़ल्लिक़ा मालियात

www.dawateislami.net

मक्तब से राबित़ा फ़रमाइये ।

चन्द मज़ीद एह़तियातें

❁ बसा अवक़ात मदनी मर्कज़ की त़रफ़ से किसी मख़्सूस मद के लिये मदनी अ़त़िय्यात जम्अ़ करने का ए'लान किया जाता है और फिर उस के लिये मदनी अ़त़िय्यात मुहिम शुरूअ़ हो जाती है तो ऐसी मद्दात में ज़ाती याद दाश्त की बुन्याद पर अपने अल्फ़ाज़ से मदनी अ़त़िय्यात वुसूल करने की हरगिज़ तरकीब न बनाइये बल्कि ए'लान किये गए अल्फ़ाज़ के मुत़ाबिक़ ही मदनी अ़त़िय्यात वुसूल फ़रमाइये ।

❁ अगर कोई सूद, जुवा या रिश्वत वग़ैरा की रक़म अ़त़िय्यात में दे तो हरगिज़ वुसूल न कीजिये बल्कि उन से अ़र्ज़ कर दीजिये कि **"दा'वते इस्लामी के मदनी**

www.dawateislami.net

अ़तिय्यात में इस क़िस्म की रक़म वुसूल नहीं की जाती" अलबत्ता अगर ना दानिस्ता तौ़र पर आप इस क़िस्म की रक़म वुसूल कर चुके हैं तो दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत से इस के बारे में शरई रहनुमाई ह़ासिल कीजिये और मिलने वाली हिदायात के मुता़बिक़ अ़मल कीजिये और अगर दारुल इफ़्ता से बा'ज़ मवाके़अ़ पर वोह रक़म सदक़ा करने का कहा जाए तो आप अज़ ख़ुद किसी फ़क़ीरे शरई को सवाब की निय्यत किये बिग़ैर अदा कर दीजिये, बहर सूरत तौबा भी कीजिये और आयिन्दा न लेने का अ़ह्द भी कीजिये।

❁ अ़तिय्यात गुम हो जाने, कम हो जाने, ज़ियादा हो जाने या चोरी वग़ैरा हो जाने की सूरत में फ़ौरन तन्ज़ीमी तरकीब के मुता़बिक़ मुतअ़ल्लिक़ा ज़िम्मादारान के ज़रीए़ मजलिसे मालियात को तह़रीरी तौ़र पर तफ़्सीलात से आगाह

www.dawateislami.net

फ़रमाइये, ऐसी सूरत में मजलिसे मालियात, इफ़्ता मक्तब से शरई रहनुमाई हासिल कर के आप को मस्अले की रहनुमाई से मुतअ़ल्लिक़ आगाह कर देगी, ज़रूरत पड़ने पर आप को इफ़्ता मक्तब में बुलाया भी जा सकता है, बहर हाल मिलने वाली रहनुमाई के मुताबिक़ ही अ़मल किया जाए, कहीं ऐसा न हो कि यहां (दुन्या) की ज़रा सी शर्म बरोज़े क़ियामत बारगाहे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में शरमिन्दगी का बाइस बन जाए। اَلْاَمَان وَالْحَفِیْظ

चन्दे से मुतअ़ल्लिक़ चन्द शरई मसाइल

सुवाल क्या हज या उ़म्रे के दम या बदने की रक़म अ़तिय्याते दा'वते इस्लामी में वुसूल की जा सकती है ?

जवाब हज या उ़म्रे के दम या बदने की रक़म मदनी अ़तिय्यात में हरगिज़ वुसूल न कीजिये क्यूं कि

www.dawateislami.net

ह़ज या उ़म्रे का दम या बदना कुरबानी की सूरत में हुदूदे ह़रम शरीफ़ में ही देना ज़रूरी होता है।

सुवाल क्या ग़ैर मुस्लिम से चन्दा लिया जा सकता है ?

जवाब ग़ैर मुस्लिम या बद मज़हब से चन्दा लेने की हरगिज़ इजाज़त नहीं। मज़ीद तफ़्सील "चन्दे के बारे में सुवाल जवाब" के सफ़ह़ा नम्बर 19 पर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

सुवाल क्या ना बालिग़ की ज़ाती रक़म मदनी अ़तिय्यात में वुसूल की जा सकती है ?

जवाब ना बालिग़ की ज़ाती रक़म मदनी अ़तिय्यात में हरगिज़ वुसूल न फ़रमाइये, हां अगर ना बालिग़ के ज़रीए़ उस के वालिदैन या सरपरस्त अपने ज़ाती अ़तिय्यात

www.dawateislami.net

भेजें तो वुसूल किये जा सकते हैं।

सुवाल उ़श्र की मद में अगर कोई नक़्दी दे तो क्या वुसूल की जा सकती है ?

जवाब अगर कोई शख़्स अपनी फ़स्ल का उ़श्र वग़ैरा बेच कर उस की नक़्दी दे तो वुसूल की जा सकती है अलबत्ता उ़श्र में वुसूल शुदा गन्दुम वग़ैरा को ह़ीले से पहले ख़ुद बेचने की हरगिज़ इजाज़त नहीं।

सुवाल क्या मदनी अ़ति़य्यात कोई इस निय्यत से अज़ ख़ुद ख़र्च कर सकता है कि मैं ने जम्अ़ किये हैं, कुछ दिनों बा'द मजलिसे मालियात को जम्अ़ करवा दूंगा ?

जवाब दा'वते इस्लामी के लिये वुसूल किये गए मदनी अ़ति़य्यात अपने या किसी और के ज़ाती मुआ़मलात पर ख़र्च कर लेने की तन्ज़ीमी व शर्र्ई तौ़र

www.dawateislami.net

पर हरगिज़ इजाज़त नहीं, ऐसा करने पर तौबा और तावान दोनों लाज़िम आ सकते हैं।

सुवाल अतिय्याते दा'वते इस्लामी में "**मन्नत**" की रक़म वुसूल करने का त़रीक़ा इर्शाद फ़रमा दीजिये ?

जवाब मन्नत के ह़वाले से मदनी अतिय्यात मौसूल हों तो किसी परचे पर मुकम्मल तफ़्सीलात लिख/लिखवा कर रसीद के साथ ज़रूर मुन्सलिक फ़रमाएं कि मन्नत क्या मानी थी और उस के अल्फ़ाज़ क्या थे ? मसलन मैं इम्तिह़ान में काम्याब हो गया तो **500** रुपै **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में दा'वते इस्लामी को दूंगा या फ़ैज़ाने मदीना में दूंगा, अगर मेरा फुलां काम हो गया तो मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में **1000** रुपै दूंगा वग़ैरा ताकि शरई रहनुमाई के मुताबिक़ ही उन अतिय्यात का इस्ति'माल किया जा सके क्यूं कि बा'ज़ मन्नतें वाजिब

www.dawateislami.net

होती हैं और बा'ज़ नफ़्ल लिहाज़ा तफ़्सील मा'लूम न होने की सूरत में मसाइल का सामना हो सकता है।

सुवाल मर्हूमीन की नमाज़ों और रोज़ों के फ़िदये वुसूल करने का त़रीक़ा इर्शाद फ़रमा दीजिये।

जवाब अगर कोई मर्हूमीन की त़रफ़ से नमाज़ों या रोज़ों के फ़िदये देना चाहे तो उसे "**मर्हूमीन की नमाज़ों और रोज़ों के फ़िदये वाला मस्अला**" जो कि दर्जे ज़ैल है, पढ़ाइये या पढ़ कर सुनाइये, अगर इस के मुत़ाबिक़ तरकीब बनती हो तो वुसूल फ़रमा कर रसीद पर ज़रूर तह़रीर फ़रमाइये।

मर्हूमीन की नमाज़ों और रोज़ों के फ़िदये का मस्अला

❀ मय्यित की उ़म्र मा'लूम कर के उस में से नव साल

www.dawateislami.net

औ़रत के लिये और बारह साल मर्द के लिये ना बालिग़ी के निकाल दीजिये। बाक़ी जितने साल बचे उन में ह़िसाब लगाइये कि कितनी मुद्दत तक वोह (मर्हूमा या मर्हूम) बे नमाज़ी रहा या कितनी नमाज़ें उस के ज़िम्मे क़ज़ा की बाक़ी हैं। ज़ियादा से ज़ियादा अन्दाज़ा लगा लीजिये। बल्कि चाहें तो ना बालिग़ी की उ़म्र के बा'द से बक़िय्या तमाम उ़म्र का ह़िसाब लगा लीजिये। अब फ़ी नमाज़ एक सदक़ए फ़ित्र ख़ैरात कीजिये। एक सदक़ए फ़ित्र की मिक़्दार दो किलो में तक़रीबन **80** ग्राम कम गेहूं या उस का आटा या उस की रक़म है और एक दिन की छ[6] नमाज़ें हैं पांच फ़र्ज़ और एक वित्र वाजिब लिहाज़ा दो किलो में **80** ग्राम कम गेहूं की रक़म मसलन **100** रुपै हो तो एक दिन की नमाज़ों के **600** रुपै, **30** दिन के अठ्ठारह हज़ार **(18,000)** रुपै और बारह माह के दो लाख,

www.dawateislami.net

सोलह हज़ार **(2,16,000)** रुपै हुए । अब अगर किसी मय्यित पर **50** साल की नमाज़ें बाक़ी हैं तो उन का फ़िदया अदा करने के लिये एक करोड़, आठ लाख **(1,08,00,000)** रुपै ख़ैरात करने होंगे ।

۞ रोज़ों का ह़िसाब भी बिल्कुल इसी त़रह़ लगाइये कि कितनी मुद्दत तक वोह (मर्हूमा या मर्हूम) रोज़े न रख सका या कितने रोज़े उस के ज़िम्मे क़ज़ा के बाक़ी हैं । ज़ियादा से ज़ियादा अन्दाज़ा लगा लीजिये । बल्कि चाहें तो ना बालिग़ी की उ़म्र के बा'द से बक़िय्या तमाम उ़म्र का ह़िसाब लगा लीजिये, अब फ़ी रोज़ा एक सदक़ए फ़ित्र ख़ैरात कीजिये, एक सदक़ए फ़ित्र की रक़म अगर **100** रुपै हो तो एक दिन के रोज़े के **100** रुपै और **30** दिन के **3000** रुपै हुए, अब अगर किसी मय्यित पर **50** साल के रोज़े बाक़ी हैं तो **50** साल के रोज़ों के फ़िदये अदा करने के

www.dawateislami.net

लिये एक लाख पचास हज़ार **(1,50,000)** रुपै ख़ैरात करने होंगे।

❁ नीज़ फ़ित्रे की रक़म का ह़िसाब भी गेहूं के मौजूदा भाव से लगाना होगा। अगर वुरसा अपने मर्हूमीन के लिये येह अ़मल करें तो येह मय्यित की ज़बर दस्त इमदाद होगी, इस त़रह़ मरने वाला भी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़र्ज़ के बोझ से आज़ाद होगा और वुरसा भी अज्रो सवाब के मुस्तह़िक़ होंगे। बा'ज़ ह़ज़रात मस्जिद वग़ैरा में एक कुरआने करीम का नुस्ख़ा दे कर अपने मन को मना लेते हैं कि हम ने मर्हूम की तमाम नमाज़ों या रोज़ों का फ़िदया अदा कर दिया तो येह मह़ज़ उन की ग़लत़ फ़हमी है। नमाज़ के फ़िदये के बारे में तफ़्सीली अह़कामात सीखने के लिये बहारे शरीअ़त ह़िस्सए चहारुम से बाब **"नमाज़ का बयान"** का मुत़ालआ़ फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

❀ अगर कोई ज़िन्दा की त़रफ़ से रोज़ों का फ़िदया देना चाहे तो उसे "**ज़िन्दा शैख़े फ़ानी के रोज़ों के फ़िदयों वाला मस्अला**" जो कि दर्जे ज़ैल है, पढ़ाएं या पढ़ कर सुनाएं, अगर इस के मुत़ाबिक़ तरकीब बनती हो तो वुसूल फ़रमाएं।

ज़िन्दा शैख़े फ़ानी के रोज़ों के फ़िदये का मस्अला

❀ हर शख़्स को रोज़े का फ़िदया देने की इजाज़त नहीं बल्कि येह हुक्म ऐसे शख़्स के लिये है जो बुढ़ापे के सबब इतना कमज़ोर हो गया हो कि अब रोज़े रखने की कुदरत पाने की उम्मीद ही न रही हो (न गर्मी में, न सर्दी में, न लगातार, न मुतफ़र्रिक़ या'नी अ़लाह़दा अ़लाह़दा तौ़र पर)

www.dawateislami.net

तो ऐसे शख़्स को रोज़ा न रखने की इजाज़त है, ऐसा शख़्स फ़ी रोज़ा एक फ़िदया या'नी एक सदक़ए फ़ित्र ख़ैरात कर सकता है लेकिन अगर फ़िदया देने के बा'द वोह शख़्स रोज़ा रखने पर क़ादिर हो गया तो जो रोज़े क़ज़ा हुए थे और उन के फ़िदये दे चुका था उन रोज़ों की क़ज़ा लाज़िम होगी और ऐसी सूरत में जो फ़िदये दे चुका था वोह नफ़्ल हो जाएंगे।

۞ अगर कोई शख़्स बुढ़ापे के इ़लावा किसी बीमारी के सबब या किसी और सह़ीह़ वज्ह से रोज़े नहीं रख पाता तो फ़िदया देने की इजाज़त नहीं बल्कि तन्दुरुस्त होने या उस सह़ीह़ वज्ह के ख़त्म होने का इन्तिज़ार करे और तन्दुरुस्त हो जाने पर उन रोज़ों की क़ज़ा करे और अगर

www.dawateislami.net

बीमारी से सिह्हत याब होने की उम्मीद ही नहीं बल्कि यक़ीन हो चला है कि अब मौत ही आ जाएगी तो ऐसी सूरत में उन रोज़ों के फ़िदये की अदाएगी के लिये वसिय्यत करे।

❁ कफ़्फ़ारा क़सम का हो या रोज़े का इसी त़रह़ फ़िदया नमाज़ का हो या रोज़े का बल्कि आ़म सदक़ए फ़ित्र में भी उस जगह का ए'तिबार किया जाएगा जहां वोह रहता है या'नी अगर कोई शख़्स मदीने शरीफ़ में रहता है और अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा इन्डिया में अदा करना चाहता है तो (ख़्वाह वोह सदक़ए फ़ित्र की अदाएगी बैरूने मुल्क करन्सी में करे या बैरूने मुल्क करन्सी के ए'तिबार से इन्डियन करन्सी में) मदीने शरीफ़ के सदक़ए फ़ित्र की रक़म का ए'तिबार किया जाएगा। रोज़े के फ़िदये के बारे में तफ़्सीली

www.dawateislami.net

अह्कामात सीखने के लिये बहारे शरीअ़त हि़स्सए पन्जुम से बाब **"रोज़े का बयान"** का मुत़ालआ़ फ़रमाइये ।

नोट : फ़िलह़ाल लौट फेर करने की सहूलत मुयस्सर नहीं लिहाज़ा आप ख़ुद ही लौट फेर कर के दीजिये, हम आप की रक़म लौट फेर के बिग़ैर शर्ई फ़क़ीर को अदा कर देंगे ।

सुवाल अगर कोई क़सम के कफ़्फ़ारे की रक़म दा'वते इस्लामी को देना चाहे तो किस हि़साब से वुसूल की जाए ?

जवाब क़सम के कफ़्फ़ारे की मद में अ़तिय्यात मौसूल हों तो वुसूल करते वक़्त इस बात का ख़ास ख़याल रखिये कि एक क़सम के कफ़्फ़ारे की मद में 10 सदक़ए

www.dawateislami.net

फ़ित्र की रक़म वुसूल की जाएगी या'नी अगर सदक़ए फ़ित्र **100** रुपै हो तो एक क़सम के कफ़्फ़ारे में **1000** रुपै वुसूल किये जाएंगे।

याद रहे ! क़सम के कफ़्फ़ारे का फ़ॉर्म अब हर रसीद बुक में मौजूद है, ज़रूरतन उस की कॉपियां करवा कर रख लीजिये, आप की सहूलत के लिये इस रिसाले के सफ़ह़ा 83 पर पुर किया गया नमूना भी दिया गया है, इस फ़ॉर्म पर दी गई हिदायात के मुत़ाबिक़ ही क़सम के कफ़्फ़ारे वुसूल फ़रमाइये और क़सम के कफ़्फ़ारे का फ़ॉर्म रसीद के साथ मुन्सलिक फ़रमाइये।

सुवाल सदक़ए फ़ित्र की मिक़्दार इर्शाद फ़रमा दीजिये।

जवाब एक सदक़ए फ़ित्र की मिक़्दार **1920**

www.dawateislami.net

ग्राम (या'नी दो किलो में **80** ग्राम कम) गन्दुम या उस का आटा या उस की क़ीमत है, इस से कम वुसूल न फ़रमाएं क्यूं कि कम वुसूली की सूरत में अदाएगी नहीं हो सकेगी अलबत्ता अगर कोई ज़ियादा जम्अ़ करवाना चाहे मसलन एक सदक़ए फ़ित्र की मिक़्दार अगर **100** रुपै मुतअ़य्यन की गई हो और देने वाला **112** या **126** के हिसाब से दे तो वुसूली की जा सकती है। लेकिन याद रहे ! ऐसी सूरत में ज़ाइद मिलने वाली रक़म को रसीद में नफ़्ली सदके के तौर पर दर्ज न करें जब तक कि सदक़ए फ़ित्र देने वाला ज़ाइद रक़म के नफ़्ली सदक़ा होने की वज़ाहत न कर दे।

www.dawateislami.net

सुवाल क्या अ़तिय्यात रसीद बुक की हि़फ़ाज़त का इन्तिज़ाम करना ज़रूरी है ? बराए करम रहनुमाई और तरबियत फ़रमा दीजिये।

जवाब मदनी अ़तिय्यात जम्अ़ करने के लिये जिन इस्लामी भाइयों को रसीद बुक्स जारी की जाएं उन को दीनी कामों के लिये चन्दा करने के फ़ज़ाइल सुनाने के साथ साथ रसीदें वापस न करने की सूरत में पेश आने वाले मुम्किना मसाइल से भी आगाह फ़रमाएं, इस का बेहतर और आसान त़रीक़ा येह है कि उन इस्लामी भाइयों को "**शरई मस्अला**" के नाम से रसीद बुक वाला दर्जे ज़ैल फ़तवा पढ़ कर सुना दिया जाए।

शरई मस्अला

अ़तिय्यात जम्अ़ करने के लिये बनाई जाने वाली

www.dawateislami.net

तमाम क़िस्म की रसीदें मजलिसे मालियात या जिस को भी दी जाएं उस के पास बतौरे अमानत होती हैं जिस की हि़फ़ाज़त करना भी उस की ज़िम्मादारी है और जिन इस्लामी भाइयों को येह रसीदें दी जाएं उन पर लाज़िम है कि तमाम रसीदें मजलिसे मालियात को वापस कर दें। बिला इजाज़ते शर्ई वापस न करना या अपनी कोताही से रसीदें गुम कर देना ना जाइज़ व गुनाह है। याद रहे कि अगर ब त़रीक़े शर्ई येह साबित हुवा कि किसी की तअ़द्दी या हि़फ़ाज़त में कोताही बरत्ने से रसीदें गुम हुई हैं तो इस सूरत में उस इस्लामी भाई को रसीदों का तावान भी अदा करना होगा। (दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

नोट रसीद बुक का मोह़तात़ इस्ति'माल न करने से रसीदें या रसीद बुक ज़ाएअ़ होने का क़वी अन्देशा है

www.dawateislami.net

लिहाज़ा अ़तिय्यात जम्अ़ करने वाले इस्लामी भाइयों को किसी भी क़िस्म की मुम्किना ग़फ़्लत व बे एहतियाती से बचाने के लिये उन की सहूलत व ख़ैर ख़्वाही के पेशे नज़र इफ़्ता मक्तब की मुशावरत से मज़्कूरा फ़तवा रसीद बुक के ऊपर भी प्रिन्ट करवा दिया गया है ताकि एहतियात का दामन न छूटने पाए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अमीरे अहले सुन्नत की ग़ुलामी और दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल पर इस्तिक़ामत के साथ हर मदनी काम के लिये हर वक़्त तय्यार रहने की तौफ़ीक़े सईद अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

ह़लाल रोज़ी किस निय्यत से त़लब की जाए ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सय्यिदुल मुतवक्किलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो ह़लाल रोज़ी सुवाल से बचने, घर वालों की ख़बर गीरी करने और पड़ोसियों पर शफ़्क़त की निय्यत से त़लब करेगा वोह क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि उस का चेहरा चौदहवीं रात के चांद की त़रह़ (चमक्ता) होगा और जो ह़लाल रोज़ी माल बढ़ाने, फ़ख़्रो तकब्बुर और दिखलावे की निय्यत से त़लब करेगा तो वोह बारगाहे इलाही में इस ह़ाल में ह़ाज़िर होगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से नाराज़ होगा।"

(مصنف ابن شیبۃ، کتاب البیوع، باب فی التجارۃ والرغبۃ فیھا، ۵/۲۵۸، حدیث:۷)

www.dawateislami.net

अतिय्यात की पुर (Fill) की हुई रसीद का नमूना

दा'वते इस्लामी - हिन्द®

तारीख़ 26-08-2015 वक़्फ़ रजी. नं. 042 - अहमदआबाद. रसीद नम्बर : 15001

म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर,
अहमदआबाद - 380001, गुजरात, इन्डिया. फ़ोन : 09375493607

नाम मअ़ वल्दिय्यत : गुलाम यासीन अ़त्तारी महमूद हुसैन फ़ोन नम्बर : 079-1234567

पता : 37 / 2 राजस्थान सोसा., शाहे आ़लम दरवाज़े के पास, अहमदआबाद

रक़म हिन्दसों में : 26000 रक़म लफ़्ज़ों में : छब्बीस हज़ार रुपै

चेक नम्बर : 4044076 बेंक : Axis Bank ब्रांच : रिलीफ़ रोड़ तारीख़ : 30-08-2015

नाम वुसूल कुनिन्दा : आसिफ़ अ़त्तारी ज़िम्मादारी/मजलिस : हल्क़ा निगरान

दस्त-ख़त वुसूल कुनिन्दा : आसिफ़ अ़त्तारी चन्दा देने वाले के दस्त-ख़त : गुलाम यासीन

मद	मक़्सद	रक़म
(स-दक़ाते वाजिबा की मुख़्तलिफ़ सूरतें म-सलन नज़्र, क़सम का कफ़्फ़ारा, फ़िद्या वग़ैरा की मुकम्मल तफ़्सील लिख कर रक़म जम्अ़ करवाएं)		
ज़कात	दा'वते इस्लामी	12000
फ़ित्रा	दा'वते इस्लामी	9000
उ़श्र	दा'वते इस्लामी	3000
स-दक़ाते नाफ़िला	लंगरे र-ज़विय्या	1000
स-दक़ाते नाफ़िला		1000
मीज़ान		26000

आप का चन्दा (तमाम नफ़्ली स-दक़ात) दा'वते इस्लामी जहां मुनासिब समझेगी वहां नेक व जाइज़ काम में ख़र्च करेगी.

www.dawateislami.net

क़सम के कफ़्फ़ारे के फ़ोर्म का पुर किया हुवा नमूना

क़सम खाने वाले का नाम : बक्र अ़त्तारी

मोबाइल नम्बर : 8469605565 **ई मेइल एड्रेस :** abc@gmail.com **घर/ऑफ़िस का पता :** फ़्लेट नम्बर 2, ब्लोक : L, सलाट वाड़ा, दिल्ही चकला, अह़मदआबाद, गुजरात

कितनी क़सम का कफ़्फ़ारा है ता'दाद : 1 **कफ़्फ़ारे की रक़म :** 1,000 **क़सम जो खाई थी उस के मुकम्मल अल्फ़ाज़ तह़रीर फ़रमाएं :**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम मैं ज़ैद से बात नहीं करूंगा लेकिन मैं ने ज़ैद से बात कर ली।

क़सम के कफ़्फ़ारे की रक़म वुसूल करने के मदनी फूल

❀ क़सम के कफ़्फ़ारे में सदक़ए फ़ित्र की रक़म में उस जगह का ए'तिबार किया जाएगा जहां क़सम तोड़ने वाला

www.dawateislami.net

शख़्स मौजूद है या'नी अगर कोई शख़्स मदीने शरीफ़ में है और अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा इन्डिया में अदा करना चाहता है तो मदीने शरीफ़ के सदक़ए फ़ित्र की रक़म का ए'तिबार किया जाएगा ।

❀ एक क़सम के कफ़्फ़ारे की मद में **10** सदक़ए फ़ित्र की रक़म वुसूल की जाए, एक सदक़ए फ़ित्र की मिक़्दार **1920** ग्राम (दो किलो में **80** ग्राम कम) गन्दुम या उस का आटा या उस की क़ीमत है, इस मिक़्दार से कम वुसूल न फ़रमाएं कि कम वुसूली की सूरत में अदाएगी नहीं हो सकेगी, मसलन एक सदक़ए फ़ित्र की रक़म अगर **100** रुपै हो तो **10** सदक़ए फ़ित्र की रक़म **1000** बनेगी ।

❀ अलबत्ता अगर कोई कफ़्फ़ारे की मद में सदक़ए

www.dawateislami.net

फ़ित्र की रक़म से कुछ ज़ियादा जम्अ़ करवाना चाहे मसलन एक सदक़ए फ़ित्र की मिक़्दार अगर **100** रुपै मुतअ़य्यन की गई हो और देने वाला **112** या **126** के ह़िसाब से दे तो वुसूली की जा सकती है। लेकिन याद रहे ! एसी सूरत में ज़ाइद मिलने वाली रक़म को रसीद में नफ़्ली सदक़े के त़ौर पर दर्ज न करें जब तक कि सदक़ए फ़ित्र देने वाला ज़ाइद रक़म के नफ़्ली सदक़ा होने की वज़ाह़त न कर दे।

۞ क़सम के कफ़्फ़ारे के लिये जो रक़म ली जा रही है "क़सम के कफ़्फ़ारे की अदाएगी" की मद में ही वुसूल फ़रमाएं, इस रक़म को हर नेक व जाइज़ काम की मद में हरगिज़ न लें।

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी

मदनी अ़तिय्यात रसीद बराए ज़िम्मादारान (नक़्दी/चेक)

रसीद नम्बर : 0007	(ज़ैली ह़ल्क़ा/ह़ल्क़ा/अ़लाक़ा/डिवीज़न/शहर/काबीना/काबीनात)	बुक नम्बर : 25

तारीख़	30 एप्रिल 2016	अ़लाक़ा (तन्ज़ीमी सरकारी)	सरखेज़	काबीना	ज़ियाई काबीना
ज़ैली ह़ल्क़ा	कन्ज़ुल ईमान मस्जिद	डिवीज़न	गुलशने मुर्शिद	काबीनात	अ़त्तारी काबीनात
ह़ल्क़ा	फ़ैज़ाने मुह़म्मदी	शहर	अह़मदआबाद	मुल्क	इन्डिया

मद्दाते वाजिबा	मक़्सद/ता'दाद	रक़म	मद्दाते नाफ़िला/मद्दाते मख़्सूसा	रक़म
ज़कात	दा'वते इस्लामी के लिये	3,000	मस्जिद	52,000
फ़ित़्रा	दा'वते इस्लामी के लिये	7,000	मद्रसतुल मदीना	12,000
उ़श्र	दा'वते इस्लामी के लिये	12,000	जामिअ़तुल मदीना	13,000
ह़ज व उ़म्रह के स-दक़ात	2 अ़दद	200	फ़ैज़ाने मदीना	25,000
क़सम के कफ़्फ़ारे	3 अ़दद	3,000	FGN चेनल	26,000
नमाज़ के फ़िद्ये	एक माह की नमाज़ों का	18,000	दारुल मदीना	11,000
रोज़े के फ़िद्ये	एक माह के रोज़ों का	3,000	मदनी क़ाफ़िला	5,500
मन्नते वाजिबा की रक़म	अल्लाह की राह में स-दक़ा	6,000	हदिय्या	2,600
दीगर			ख़ैरात	1,200
दीगर			हर नेक व जाइज़ काम	26,000
दीगर			दीगर	
दीगर			दीगर	
दीगर			दीगर	
टोटल रक़म (हिंदसों में)	52,200		टोटल रक़म (हिंदसों में)	1,74,300
कुल रक़म हिंदसों में	226,500	कुल रक़म लफ़्ज़ों में	दो लाख छब्बीस हज़ार पांच सो रुपै नक़्द	

रसीद नम्बर्ज़ : बुक नम्बर 50 (रसीद नम्बर 01 ता 18) और बुक नम्बर 58 (रसीद नम्बर 80 ता 96)	टोटल रसीद की ता'दाद	35
चेक नम्बर्ज़ : SBI-12345 & AXIS-12345	टोटल चेक की ता'दाद	2

बक़िय्या अगले सफ़्ह़े पर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये 1/2

नोट	ज़र्ब	ता'दाद	रक़म	नोट	ज़र्ब	ता'दाद	रक़म
1000	X	20	20,000	1000	X	92	92,000
500	X	42	21,000	500	X	88	44,000
100	X	22	2,200	100	X	63	6,300
50	X	40	2,000	50	X	52	2,600
20	X	25	500	20	X	60	1,200
10	X	118	1,180	10	X	219	2,190
5	X	26	130	5	X	140	700
2	X	70	140	2	X	110	220
1	X	50	50	1	X	90	90
टोटल			47,000	टोटल			1,49,300

अ़तिय्यात जम्अ़ करने वाले इस्लामी भाई की तफ़्सीलात		मा'रिफ़त		अ़तिय्यात वुसूल करने वाले इस्लामी भाई की तफ़्सीलात	
नाम	अ़ब्दुल्लाह अ़त्तारी	नाम	अ़ब्दुर्रहमान अ़त्तारी	नाम	ज़ैद अ़त्तारी
ज़िम्मादारी	ह़ल्क़ा मुशावरत मदनी इन्आ़मत	ज़िम्मादारी	ह़ल्क़ा निगरान	ज़िम्मादारी	अ़लाक़ा निगरान
मोबाइल नम्बर	01112252692	मोबाइल नम्बर	01112252695	मोबाइल नम्बर	01112252692
दस्तख़त	Abdullah Attari	दस्तख़त	Abdurrahman Attari	दस्तख़त	Zaid Attari

www.dawateislami.net

अ़त़िय्यात जम्अ़ करवाने के लिये एकाउन्ट्स की तफ़्सील

दा'वते इस्लामी के मदनी कामों के लिये मदनी अ़त़िय्यात जम्अ़ करवाने के लिये ज़कात, फ़ित़्रा और सदक़ाते नाफ़िला वग़ैरा के लिये अलग अलग एकाउन्ट्स की तफ़्सीलात दर्जे ज़ैल है, मुलाह़ज़ा फ़रमाएं, नीज़ जब भी दर्जे ज़ैल में से किसी एकाउन्ट बिल ख़ुसूस ज़कात व फ़ित़्रा वाले एकाउन्ट में किसी भी ज़रीए से मदनी अ़त़िय्यात ट्रान्सफ़र या डिपोज़िट फ़रमाएं तो ट्रान्सफ़र रसीद के साथ Madnirazvimaliyatmaktab@gmail.com पर मुत्त़लअ़ फ़रमाएं, नीज़ ब ज़रीअ़ए SMS या Whatsapp इस नम्बर **8469605565** पर भी इत्त़िलाअ़ दी जा सकती है।

www.dawateislami.net

﴾1﴿ बराए ज़कात व फ़ित्रा

A/c Name	:	Dawate Islami Hind
A/c No	:	913020052789237
Bank Name	:	Axis Bank
Branch	:	Relief Road (Ahmedabad)
IFSC Code	:	UTIB0000453
Pan No	:	AAATD8357K

﴾2﴿ बराए ज़कात व फ़ित्रा

A/c Name	:	Dawate Islami Hind Zakat
A/c No	:	30914800756
Bank Name	:	State Bank of India
Branch	:	Byculla (Mumbai)
IFSC Code	:	SBIN0000343
Pan No	:	AABTD0414G (sixth digit is zero)

www.dawateislami.net

﴾1﴿ बराए अ़तिय्यात व सदक़ाते नाफ़िला

A/c Name	:	Dawate Islami Hind
A/c No	:	910010032457716
Bank Name	:	Axis Bank
Branch	:	Relief Road (Ahmedabad)
IFSC Code	:	UTIB0000453
Pan No	:	AAATD8357K

﴾2﴿ बराए अ़तिय्यात व सदक़ाते नाफ़िला

A/c Name	:	Dawate Islami Hind
A/c No	:	31255546072
Bank Name	:	State Bank of India
Branch	:	Sewa Sadan Chauk (Nagpur)
IFSC Code	:	SBIN0060279
Pan No	:	AABTD0414G (sixth digit is zero)

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के ख़िदमते दीन के शो'बाजात

﴾1﴿ मदनी इन्आ़मात ﴾2﴿ मदनी क़ाफ़िला ﴾3﴿ मजलिसे तह़क़ीक़ाते शरइय्या ﴾4﴿ दारूस्सुन्नह ﴾5﴿ मजलिसे हफ़्तावार इज्तिमाअ़ ﴾6﴿ इज्तिमाई़ ए'तिकाफ़ (पूरा माहे रमज़ान/ आख़िरी अ़शरा) ﴾7﴿ मजलिसे ह़ज व उ़म्रह ﴾8﴿ मजलिसे हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा ﴾9﴿ जामिअ़तुल मदीना (लिल बनीन) ﴾10﴿ जामिअ़तुल मदीना (लिल बनात) ﴾11﴿ मद्रसतुल मदीना (लिल बनीन) ﴾12﴿ मद्रसतुल मदीना (लिल बनात) ﴾13﴿ मद्रसतुल मदीना (जुज़ वक़्ती) ﴾14﴿ मद्रसतुल मदीना लिल बनीन (रिहाइशी) ﴾15﴿ मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) ﴾16﴿ मद्रसतुल मदीना कोर्सिज़

www.dawateislami.net

﴾17﴿ मद्रसतुल मदीना ऑन लाइन ﴾18﴿ दारुल मदीना (लिल बनीन) ﴾19﴿ दारुल मदीना (लिल बनात) ﴾20﴿ दारुल मदीना (स्कूल) ﴾21﴿ दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत ﴾22﴿ अल मदीना लायब्रेरी ﴾23﴿ तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह ﴾24﴿ मजलिसे ति़ब्बी इ़लाज ﴾25﴿ मजलिसे तौक़ीत ﴾26﴿ मजलिसे कारकर्दगी फ़ोर्म व मदनी फूल ﴾27﴿ मजलिसे कोर्सिज़ (मदनी इन्आ़मात व मदनी क़ाफ़िला कोर्स, कुफ़्ले मदीना कोर्स, 63 रोज़ा कोर्स वग़ैरा) ﴾28﴿ अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या ﴾29﴿ मजलिसे तराजिम ﴾30﴿ मक्तबतुल मदीना ﴾31﴿ दा'वते इस्लामी का चेनल ﴾32﴿ मजलिसे आई टी ﴾33﴿ दा'वते इस्लामी का चेनल रिले मजलिस ﴾34﴿

www.dawateislami.net

शो'बए ता'लीम ﴾35﴿ मजलिसे ख़ुसूसी इस्लामी भाई ﴾36﴿ मजलिसे चर्मे क़ुरबानी ﴾37﴿ मजलिसे ताजिरान ﴾38﴿ मजलिसे वुकला व जजिज़ ﴾39﴿ जामिअ़तुल मदीना (ऑन लाइन) ﴾40﴿ मजलिसे डॉक्टर्ज़ ﴾41﴿ मजलिसे होमियो पेथिक डॉक्टर्ज़ ﴾42﴿ मजलिसे वेटर्नरी डॉक्टर्ज़ (मुआ़लिजे हैवानात) ﴾43﴿ ऑन लाइन कोर्सिज़ (उ़लूमे इस्लामिया कोर्स, फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स) ﴾44﴿ मजलिसे इस्लाह़ बराए खिलाड़ियान ﴾45﴿ मजलिसे उ़श्र व अत़राफ़ गाउं ﴾46﴿ मजलिसे राबित़ा ﴾47﴿ मजलिसे राबित़ा बिल उ़लमा वल मशाइख़ ﴾48﴿ मजलिसे मज़ाराते औलिया ﴾49﴿ मजलिसे तफ़्तीशे क़िराअत व मसाइल ﴾50﴿ मजलिसे

www.dawateislami.net

ताजिरान ﴿51﴾ मजलिसे ख़ुद्दामुल मसाजिद ﴿52﴾ आइम्मए मसाजिद ﴿53﴾ मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या ﴿54﴾ मजलिसे इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त ﴿55﴾ मजलिसे तक़्सीमे रसाइल ﴿56﴾ मजलिसे ख़ैर ख़्वाही (ज़ल्ज़ला व सैलाब ज़दगान वग़ैरा) ﴿57﴾ मजलिसे इमामत कोर्स ﴿58﴾ लंगरे रज़विय्या ﴿59﴾ मजलिसे मालियात ﴿60﴾ मजलिसे असासा जात ﴿61﴾ मजलिसे इजारा ﴿62﴾ मजलिसे ह़िफ़ाज़ती उमूर ﴿63﴾ मजलिसे फ़ैज़ाने मदीना (मदनी मराकिज़) ﴿64﴾ मजलिसे ता'मीरात ﴿65﴾ मजलिसे कारकर्दगी ﴿66﴾ मजलिसे मदनी अ़तिय्यात बक्स ﴿67﴾ मजलिसे मदनी बहारें ﴿68﴾ मजलिसे फ़ैज़ाने मुर्शिद

www.dawateislami.net

﴾69﴿ मजलिसे तज्हीज़ो तक्फ़ीन ﴾**इस्लामी बहनों की मजलिसे मुशावरत के तह्त शो 'बे**﴿ : ﴾70﴿ मजलिसे मदनी काम बराए इस्लामी बहनें ﴾71﴿ मजलिसे फ़ैज़ाने मुर्शिद बराए इस्लामी बहनें ﴾72﴿ मजलिसे शो'बए ता'लीम बराए इस्लामी बहनें ﴾73﴿ मजलिसे ख़ुसूसी इस्लामी बहनें ﴾74﴿ मजलिसे मदनी इन्आमात बराए इस्लामी बहनें ﴾75﴿ मद्रसतुल मदीना (बालिग़ात) ﴾76﴿ मजलिसे कोर्सिज़ बराए इस्लामी बहनें ﴾77﴿ मजलिसे हिफ़ाज़ती उमूर बराए इस्लामी बहनें ﴾78﴿ मजलिसे राबिता बराए इस्लामी बहनें ﴾79﴿ दारूस्सुन्नह बराए इस्लामी बहनें ﴾80﴿ मजलिसे मद्रसतुल मदीना लिल बनात ऑन

www.dawateislami.net

लाइन ﴾81﴿ मजलिसे ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या बराए इस्लामी बहनें ﴾82﴿ मजलिसे तिब्बी इलाज बराए इस्लामी बहनें ﴾83﴿ मजलिसे मालियात ﴾84﴿ मजलिसे तह़फ़्फ़ुज़े अवराक़े मुक़द्दसा ﴾85﴿ तख़स्सुस फ़िल्लु ग़तिल अ़रबिय्यह ﴾86﴿ मजलिसे मदनी दर्स ﴾87﴿ मजलिसे इस्तिदयादे हुब (मदनी इन्आ़म नम्बर 55) ﴾88﴿ मजलिसे ख़ुद कफ़ालत ﴾89﴿ मजलिसे दारुल मदीना कॉलेज व यूनीवर्सिटी ﴾90﴿ मजलिसे मदनी कोर्स ﴾91﴿ मजलिसे सोश्यल मीडिया ﴾92﴿ मजलिसे राबिता़ बराए ताजिरान ﴾93﴿ मजलिस बराए तह़फ़्फ़ुज़े रिज़्क़

6, जुमादल उख़्रा 1437 हि./16 मार्च 2016 ई.

www.dawateislami.net

ماخذ و مراجع

☆☆	قرآنِ کریم	کلامِ باری تعالیٰ	☆☆☆☆☆☆
نمبر شمار	کتاب	مصنف/مؤلف/متوفی	مطبوعہ
1	کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ
2	خزائن العرفان	صدرالافاضل مفتی نعیم الدین مرادآبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ
3	صحیح البخاری	امام ابوعبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
4	سنن الترمذی	امام ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۱۴ھ
5	سننِ ابی داؤد	امام ابوداوٗد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۱ھ
6	المؤطا	امام مالک بن انس اصبحی حمیری، متوفی ۱۷۹ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
7	المعجم الکبیر	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۲ھ
8	الترغیب والترھیب	امام زکی الدین عبدالعظیم بن عبدالقوی منذری، متوفی ٦٥٦	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
9	مشکاۃ المصابیح	علامہ ولی الدین تبریزی، متوفی ۷۴۱ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
10	مرقاۃ المفاتیح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	नं.	उ़न्वान	नं.
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	1	मदनी अ़तिय्यात के बस्ते	
दा'वते इस्लामी के शो'बाजात		लगाने के मदनी फूल	29
का मुख़्तसर तआ़रुफ़	2	बेनर का नमूना	34
राहे ख़ुदा में ख़र्च करने की फ़ज़ीलत	7	मद्दाते वाजिबा और मद्दाते मख़्सूसा	
अ़तिय्यात जम्अ़ करने की फ़ज़ीलत	9	से मुतअ़ल्लिक़ एह़तियातें	36
अ़तिय्यात में ख़ियानत पर वईद	11	झोली और बस्ते के लिये अल्फ़ाज़	
अमीरे अहले सुन्नत की त़रफ़ से		व एह़तियातें	42
ख़ुसूसी मदनी फूल	12	सदक़ाते नाफ़िला की झोली के	
अ़तिय्यात जम्अ़ करने की निय्यतें	13	मोह़तात़ अल्फ़ाज़	46
मदनी अ़तिय्यात की अक़्साम	14	मदनी अ़तिय्यात के बस्ते पर	
मदनी अ़तिय्यात जम्अ़ करने के		सदा लगाने के मोह़तात़ अल्फ़ाज़	46
त़रीक़े और एह़तियातें	16	रसीद बुक के ह़वाले से अहम	
मदनी अ़तिय्यात के लिये		हिदायात और एह़तियातें	47
मुलाक़ात के मदनी फूल	24	नक़्दी (CASH) के मुतअ़ल्लिक़	

www.dawateislami.net

उ़न्वान	नं.	उ़न्वान	नं.
अहम हिदायात और एह्तियातें	51	का पुर किया हुवा नमूना	83
चेक और बेंक के मुतअ़ल्लिक़		क़सम के कफ़्फ़ारे की रक़म	
अहम हिदायात और एह्तियातें	58	वुसूल करने के मदनी फूल	83
चन्द मज़ीद एह्तियातें	62	मदनी अ़तिय्यात रसीद बराए	
चन्दे से मुतअ़ल्लिक़ चन्द		ज़िम्मादारान	86
शर्ई मसाइल	64	मदनी अ़तिय्यात जम्अ़ करवाने	
मर्हूमीन की नमाज़ों और रोज़ों		के लिये एकाउन्ट्स की तफ़्सील	88
के फ़िदये का मस्अला	68	दा'वते इस्लामी के ख़िदमते दीन	
ज़िन्दा शैख़े फ़ानी के रोज़ों के		के शो'बाजात	91
फ़िदये का मस्अला	72	मआख़िज़ो मराजेअ़	97
शर्ई मस्अला	78		
अ़तिय्यात की पुर (Fill) की हुई			
रसीद का नमूना	82		
क़सम के कफ़्फ़ारे के फ़ोर्म			

www.dawateislami.net

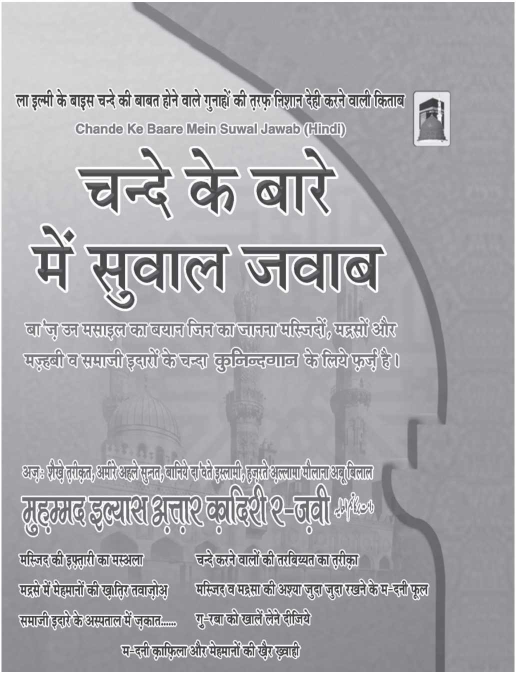
ला इल्मी के बाइस चन्दे की बाबत होने वाले गुनाहों की त़रफ़ निशान देही करने वाली किताब
Chande Ke Baare Mein Suwal Jawab (Hindi)
चन्दे के बारे में सुवाल जवाब
बा'ज़ उन मसाइल का बयान जिन का जानना मस्जिदों, मद्रसों और मज़्हबी व समाजी इदारों के चन्दा कुनिन्दगान के लिये फ़र्ज़ है।
अज़ः शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी
मस्जिद की इफ़्त़ारी का मस्अला
चन्दे करने वालों की तरबिय्यत का त़रीक़ा
मद्रसे में मेहमानों की ख़ात़िर तवाज़ोअ़
मस्जिद व मद्रसा की अश्या जुदा जुदा रखने के म-दनी फूल
समाजी इदारे के अस्पताल में ज़कात......
गु-रबा को खालें लेने दीजिये
म-दनी क़ाफ़िला और मेहमानों की ख़ैर ख़्वाही

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना **"फ़िक्रे मदीना"** के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ में अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा म-दनी मक़्सद : **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ "** अपनी इस्लाह़ के लिये **"म-दनी इन्आ़मात"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है।

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com
www.dawateislami.net Mo. 091 93271 68200